TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4509

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

रख्योछै नमरगुजारकर रख्योछै जठैधरमरा
जारानगराछै जठैरूपवंतप्रस्त्रीछै सोत्व
वरछैमेरहैछै नीतीनीतरावणवछै पुनी
मराचंद्रमासरषाक्रांतीछै पुनीमकरेछै तके
उठैनायेछै देवनरकुवातलावबावडीम्हेरो
वरोवरकरोछै परमेस्वररीसेवाजेकिक
रे जोकेयुछैबेगोछै कषिस्वरोवाच संसा
रतरवपारीमारगवतावो जोगकितोवाच
जकेदेलीछैनेतरेजाईबेधनगामोईतठै
जरहछै धरमकीयोतीयसापे:पावेजन

1

रोमारागकवनबै तबैएकवनछै तपतबे
बुडै बेतरणीनदीछै आगारारारासबै
बुलविसाईबै धरमकीजबै सोआमो
आवबै गायदीयेजीकोबैतरनीनदीमै
हे अनारहबै दुखपकमीनितरबै पेचसत
घरोएकतलावबै तबैतपतवे दुबै येजा
ररोजोमोबठे आवबै दांनदेवेसोपावेबै
अमराजाबेवाबै रूषीस्वरबेगाबै अत
रनाराकेनोवाच: अतरैनारदजीआया
बै तेजधाराघणीबै तेजभा[illegible]यकीगे

ॐ मोतनड्न मधुकरहृसनकोंन ञनरितक्ष
ॐ मोतनड्नमधुकरहृसनकोंनञनस्तिक्ष

॥६०॥ श्री गणपतेनमः॥ श्री सारसुतीनमो नमो
॥ अथ श्री मधुमालती चोपई॥ नाखाबंधग्वाले
र मथि लिख्यते॥ दोहरा॥ अलष निरंजन चित
धरि समरा सारद माय। कथा कहुं मधुमालती
सबजन कें सुखदाय॥१॥ चोपई॥ वर विरंचि
तनया वर पाउं। शंकरसुत गणपति मनांऊं। चा
उरहे तसह चरारि ऊाउं। रसिक मालती मनो
हर गाउं॥१॥ लीलावती ललित ओकदेशा। चंद्रसे
नतिहां सुघड नरेसा। सुनगाथं मजिहो गगनपु
वेशा। मालुं मंउलरच्यो महेशा॥२॥ वसेहे वरपु
रयोजन च्यार। चोरासी चोहटा चिहुंबार। अति
विचित्र देसें नरनार। मालुं तिलक नरलु वनम 3
झार॥३॥ करे सेवन नृपकुल छत्तीसा। चढे सहस

दस साथ अईशा। ऊरेहे मेंमत कुंजर केरे चा
सा॥ चंद्रसेन नृप तेजें ऐसा॥४॥ दोहरा॥ हय
दल अनंत अपार। कुंजर कारे मेघसुं॥ तुरा
छत्तीस हजार। चढे साथ नृप चंद्र कें॥५॥ चोप
ई॥ मंत्री बुद्धि पराक्रम तो म। तारण साह तास
को नाम। निसदिन साम धरम सुं काम। नृप
ति नतजें घडी पलक जांम॥६॥ नृपकें ग्रह
अतेवर च्यार। संतति एक मालती कुमार
वरणुं कहा जरूप अपार। मानुं उर वसी
लीयो चवंतार॥७॥ उपमा कंथ्य णपटं मर
कहुं। गुण अनेक न विपार न लहुं। विरुद्धि 4

नरूप अनोपमा चंदो॥ जेसें अवरनां हि वध्य
घडें॥८॥ गजकपोत हरि बिंब प्रवाला॥ मानु म
मुकर मीन र माला॥ कदली कनक कीर पिक
सोही॥ एसा सोना तन की होई॥१०॥ जा देषी
चित्त चले महेसा॥ दिष त धरणी डर सेस॥ सु
र नुलें जई अधर अदरा॥ रागिनी नलें मोले मुहि
दशा॥११॥ राज लोक वरणन कहा कहूं॥ थो
रीसी मंत्री की लहूं॥ पोरी मांऊ बहोत सुख
होई॥ अति विलास नोगी सु सोई॥१२॥ ता रण
साहस घड गुण सारा॥ त्रिया एक तसु एक कु
वारा॥ ता को नाम मनोहर थयो॥ मानुं काम २

दूजो अवतर्यो॥१३॥ मधुर कहो षेलावे मात॥
वाधे कला मानुं चंद गात॥ घडी दिवस पष मा
स नञोर॥ जेसें वसंत पिक चंद चकोर॥१४॥
नयौवर सदस दो के संथ॥ देष तत्रा या हो वें का
मांथ॥ तन मन धन सुध्य वीसरा गेहा॥ नंगा न
ई मानु गति ते ह॥१५॥ जिहां तिहां के नरक
रें ब कुषेल दोरा लागा फिरे त्रिया गेल॥ कब
ही कराम सरोवर जाय॥ नंगी यूथ मां नुं वोक
लुलाय॥१६॥ दोहरा॥ रामसरोवर पाल की॥
सोना वरणी न जाय॥ खित वरण पंक जति
हां॥ मुनिजन रहें लोनाय॥१७॥ चोपई॥ सो
नाक वण राम सरोवर कहो॥ बहोत विहं 5

गमञ्रतितिहांरहे॥ उफ्फ्ल्याकमलवासेंमह
महें॥ एसीञोपमारामसरोवरलहें॥१७॥
ञ्रबलंकीतिहांपांणीनरें॥ चितवतांऊंञ्न
सासथीगिरें॥ रीतेकूलसहाथथीपरें॥ नली
मांनमीमांनविनमरें॥१८॥ मालतीएवात
सुणपाई॥ मधुदेषणऊंमनसाधाई॥ मन
मेंकहाकेहेनसुणावें॥ जेसेचात्रकसंपा॥ म
ऊंध्यावें॥१९॥ जबलगमधुञपनेंघररह
हें॥ कितीएकनारितिकांनोगहे॥ उनकेंस
ऊंनकहुइककहें॥ कितीबरीनलीसब
सहें॥२०॥ ञेसेंनयेंदिवसदसबीस॥
सुणीतातजबकीनीरीस॥ इहवातसुणी

७

हेंनपजीस॥ कहांऊंवस्सरवरकातीस॥२१॥
ञबतोकऊंञनंतजनजावें॥ मेवालिलरका
ऊंषिलावें॥ पंडितकेंढिगबेंठपढें॥ गोञ्रा
लहोवोकितेंगेवलचढे॥२२॥ श्लोक॥ दो
होलोचनसर्वांणां॥ विद्यायांतीनलोचनं॥ स
तलोचनधर्मांणां॥ ज्ञानीअनंतलोचनं॥२३॥
चोपई॥ दोयलोचनपशुपंषीनरां॥ तीजोलो
चनविद्याकेंघरां॥ लोचनसातधर्मजेहक
रां॥ ज्ञानीलोचनगिनतनपरें॥२४॥ नंदको
हितलीनोबोल॥ दूढमहीरतपायोबोल
जोकेंनरपढेंदसबोल॥ दसुंकनककबरा

6

बताल।२५॥ नंदपरोहित लीनो सोध॥म
धुकुं विद्यादेन प्र बोध॥जे जे अक्षर पंडि
देह॥ते तो कुंवर के ठेले गेह॥२६॥ एकदि
वस मंत्री के काज। कृपा कर तद पूछै राज
कुमरी पठावो जो क हुपढै। के इक दिवस
मो हुछे चढै ॥२७॥ मंत्री कहै राय अवधा
र॥ अति विचित्र पंडित अक सार॥ वरस
साठि पेसव के मध्य॥ चउद विद्या जो ए
हंसुध्य॥२८॥ चंद्रसेन नृप अंसे उकवेर॥
जो मालतीपढवे की करे। नि तर जाय वे
गी सुं ध्यले ऊं॥ जो मंत्री उऊ आदेस दे ऊं॥

॥२९॥ दोहरो॥ कवीरावाच॥ कारीकर
म कपाल को। विधना लषी सु जाय। मधु
मालती विलास को। लागो होण उपाय।
॥३०॥ चौपाई॥ गयो राय अंते उर जिहां
कनक मालरा णी हैं तिहां॥ राणी सुं पूछै
हित चव। पंडित एक महा सऊ नदेव॥३१॥
जो मालती पढ वै का कहे। तो पंडित दह
मठा रहे॥ आटक घरी दोय दिन कहै
थोरो थोरो अक्षर लहे॥३२॥ कुंवरी क
हे सुणे हो तात। मेरे एक विद्यासु बात।
पंडित अके क बोलावो प्रात॥ ठीक बेठ

५

पढ़ें दिनरात॥३३॥ देषि वदन मालती वि
साल॥ मन में चिंता थई नृपाल॥ कन्यावर
आपति कें नाई॥ आज काल जन तउ पजें नाँ
ही॥३४॥ ऐसी मन मांहिं चिंता थई नृपा
ल॥ कन्या वर आपति कें नाई॥ आज का
ल जन तउ पजें न ही॥३४॥ ऐसी मन मांहि
चिंता करें॥ कुनिक कुअ अवर विचार
ज धरें॥ पढबेके कारण विलंबी रहे॥ तब
लग वर ढूंढें नृप कें हें॥३५॥ पढ पैरख बं
धा नृप कें हें॥ तितरक बंरी मालती रहे॥
पंडित दिग मंत्री को बाल॥ बैठो रहें पढे॥

५
५

चित्रसाल॥३६॥ मंत्री कें अरनो मजबक
लो॥ सुण त मालती हियें सचनयो॥ आके
मन मिलवा की तास॥ मन साको दाता जग
दीस॥३७॥ काव्य॥ गिरिकालापी गगने च
मेघा॥ लक्षे॥ तरे भानु जले च पद्म द्विल
क्षे सोम कुमुदस्य नाले॥ जिय स्य चित्ते
न क दाचि दूरे॥३८॥ चापई॥ कपट वच
न बोलें इक राय॥ पंडित दरसन देषो न
हो जाय॥ त्रियाहोय कर निरषें जेह॥ खित
वर्ण होइ ताकी देह॥३९॥ मंत्री सुत आधो
बैठो॥ निसदिन बैठो पढबें तिहां॥ पंडि

तजलोअखरनेदेह॥ तातेमनउपजेसंदे
ह॥४०॥ जोमनसापडवैकीकहे॥ तोपटप
रेचकीउऊलरहे॥ बाहिरतेंगुरुअखर
कहे ऐसेसहितवियाउमलहे॥४१॥
मालतीचतुरविचक्षणअंगा॥ कूकेसक
लवातकोरंग॥ नृपसुतउत्तरजंपेआंमम
रेअकविद्यासुकांम॥४२॥ पटपरेंचबी
धीगहव्यार॥ मुषदेषाकोकोणविचार॥
अमरवचनसुकासोकहे॥ पंडितमन
मांमेंजहांरहे॥४३॥ मालतीवचनसुणी
सचपायो॥ तबहीपंडितवेगबुलायो

६

पटपरेचकीउऊलदई॥ पढवेकंपाटी
लिषदई॥४४॥ नागरी भाषा॥ ॐनमसि
द्धं प्रथमपढाई॥ कुनिकको वेगजणा
ई॥ बावनअखरवेगेंकाने॥ बारबरी
बहोरीलिषदीने॥४५॥ चाणाइकव्या
करणसमेत॥ अमरकोसपिंगलब
रूनांत॥ जेकरकमलदीयो॥ सरसती
कुकांत॥४६॥ पंडितजे जेअखरदेह॥
सुणतमालतीसबेसीषलेह॥ तोमाव
वेंआगमकेंडी॥ मालंबडमांऊलेप
ढी॥४७॥ मंत्रीसुतकबुअधिकोपढे

9

कणत मालती सें बसी षेलहा ॥ मा वां
वें न्नाग मकडो ॥ मानुं उडमां फ़ते पडो:
[illegible] मंत्री सुत कहु अधिको पंटो ॥ कण
त मालती चुं पजी यनदें ॥ निमष एक बो
ले न्नाम लाय ॥ दोयसरस नव र लेंजाय
[illegible] एक दिवस गुन्नार गिगयो ॥ मन
मंगुंज मालती ठयो ॥ पट पेम्व सुंदीनें
नयण निरषें मानुं भगयो ॥ मयण [illegible]
[illegible] नइख ह व
र बार मधुसुर ति निरषेत नु ॥ मा नुं
मीन सुंजार ॥ गिरेमीनसुं मालती ॥
[illegible] ॥ पट परे चहु रा ग्रहा फार ॥

केरंग्रहो फलनकी माल ॥ मधुउँचो चित्त युं रहो
पेष ॥ मालती वदनक लानिधि देषे ॥ [illegible]
[illegible] चितवन हे चिडं नयण मधु मधुवा
यक उररहे ॥ भगेरा भर नमयण ॥ मा नेहत
मधुमालती ॥ [illegible] ॥ मधु जीव सुंक ॥
रही निरधार ॥ नीचा हष्टि धरणी परे उा ॥ मा
नुं सिर होलि ॥ कें जैस हस कल ॥ लज्या न हुं
ते तें उबल ॥ [illegible] मालती फिर वांछु आपसे
तोरा ॥ कुंजी फलगोद की मारंग ॥ वदन दुराय
रहो कहे केसे ॥ निरष वदनकुंन जेंसे ॥ [illegible]
फल कमपरव देषे द्विगजिसो ॥ तव बेरहे घागे

२
८

विनतेसे मीिकरवोजांनीयें केसेंआर
तिकृतजांनीयें ग्रेंसें [illegible]
इंद्रायण फलसुंदरहोइ षावेंकंइवेन
होकोइ विनबूऊ सोचाये कोइ तिहसु
वटासिबरसीहोइ [illegible]
सुवटो सिबरदेषि मानुं ग्ने बतेसोहफ
लें कुमिपाकेतेंपषि देहपिंजरा ज्यूंजइ
[illegible] करतरुतो
सेव्योनहा ताऊंग्रा वतेंहेंलऊ स्पानप
नोतोसबगया सेव्योचूरु ग्रकऊ [illegible]
सेव्योचरु ग्रकऊ कारजकोनांहिस्या ५

यो रानीपोहपजदेषि सकोसेंबलमायो
[illegible] चंचकंगेरोंशरधूणे रोयविंकदि
श्रेंजा जेजे साकोसंग्रकेरे तेतेंसाफलषा
य [illegible] पंडितबघरोएकनवू
कें वाडुरहोयपरपरसऊं नकऊजी
तेंनकऊहारो सचनबपेंसुंणिमडारि
[illegible] चरेंसरोवरकेंटि
गप्यासें फलेंवृक्षमलरहेंतउपयासेंके
सोतामेंस्पानपकहींझें कुनिताकोवंत
रकहांलहिइं [illegible] फलको
नषनजलकोप्यास सेंनमेंनमेंमुमेंफिरे
उदास मेरेवचनजोविसरीजे नांगंना 11

१०

कोगेंलनकीजि [illegible] फलकीचषन जुलम
प्यास सैंनमेंन मेंनमें फिरेंउदास। मरव
वनजो चित्रदीजे। नागेताको गेंलन कीजे
[illegible] मधुचपनीसीवऊतेंटारें। मालती
वह मन सा न लीहारें। जिसें मनधरें शानि
संध फनिचकोरजेंसेंनारविंद [illegible]
[illegible] वादें संगतिसि
नेह। मगसिघनीजेंसे नई। मधुजंपेंगती
तेऊ समकिंदेषिजीयमालती [illegible]
[illegible] मालतीकहेंमधु
वेगसुणवो। मगसिघनीकामोजंव
तावो। केसेंनईसोसुणलीजें। वोकुनि

१०

ताको उतरदीजें [illegible] मधु
पें कोकितीएक गाउं। जोनऊतोनेंकसुना
ठं। मगएकजातिकोंमको मातो। म मेंपूष
कोंहि फिरेंरंगरातो [illegible] नीलो द्वाम वहें
दिनसारो। अलिमदखेलवहेंजिनगास
नवदसमगनीजाहितसुनारी। नामंवु
हंकारी सिरदारी [illegible] सिबनी हूं छिपसो
जहिरनां। अगम्योकोंमलक्यो तानजरनां।
मगाईचें मंनप्रीतमकरनां। चलीजहिंका
र रहें हरी धरनां [illegible] केहरीकी त्रियामन
वकाई। तजी तिकाणौ चल्यो पुलाई। वे

12

हो सिंघनी चाडी आई थिर रहो मंगल
जि कित जाइ ॥ दोहा ॥ तेरा जीउ कार ज्ञान
रिऊं मन सा बाचा करि चित्त धरिऊं ए
हम सत्य चित्त कहा चाषी जाके पवनस
रहसाषी ॥ दोहा ॥ जो तेरा जीउ ठिकाणें राषं
कुनिर वचन सिंघनी चाषे मेरा हूं तनकी
पीर सुनाउं जो तुम पें एक निहचौ पाउं
॥ दोहा ॥ मेरा तनकुं विरह संतावें ज्यो
ऊ मेरी पीर बुझावें ऊं तो पें इह ह्या च
न आई मेरो प्रीतम होइ सहाई [illegible]
तो मम प्रीतम जे कुं पेऊं को उतन तो ऊं १२

अहित सुख देऊं ॥ म.ग. जो तें मो पें सच पेहो जा
को प्रीत परे षो लेहो ॥ [illegible] सुनि
सिंघनी बोले म.ग. कोरे ॥ हम तो आहि तिहारे
आरो ॥ मोहि तेरो विश्वास न आवें ॥ तुं कपट
रूप कित ढिग आवे [illegible] तुम तेरे मोर स
पुं न आई ॥ मोकुं छल न है तकि म आई ऊं
जर वन सौं घनी संघारें ॥ म.ग. कें तो निश्वासं
मारें [illegible] पूरव विरोध जो जासु होई ॥ ताको वा
तन मानें कोई ॥ कैसें जो पतीजें जाई ॥ तो घरह
रवा गज इ सो होई [illegible]
[illegible] ॥ परस्परं विरोधेन ॥ शत्रु मित्र 13

नहै।नतो। द्रुथंकोगउलूकानी।वजलेंतिऊता
सनं। [illegible] सियरानी
मगठकेंकऊँएसी।घूहरकोगनदूसोकेसी।
कैसेंकरीउण वायस मास्यो।वेगनगु़फा
मांहिंकुंजास्यो।।१०८॥ [illegible] मग जंपे
सुनि सिघनी बानी।जो ऊँ लोकऊकहोनी।
पंषीयरथमिलेंसबआंनी।घूहर राजदेणउ
गणी। [illegible] तोलुंकागकिंहांसेआए।पंषीकि
तेइकएकतबोलाए।समाचारउनपेजब
पाए।।तबकागेंश्रीगुरमुषलाए।।१०९॥ एसी
कबुद्धिमतकरिहो।पीछेसबेअषूटीमरहो
राजागुडताकुंनहीजांणो।।ताउपरिउमघूह
रवांणो नोकेबलनांईसस्तपनजेपे।नी..

१२

नलोकजोकेंफरकेंपे।पूछीवचनसेंसुनिसर
के।जोकेंमोथेंवसुधाढरके।।२११॥ टीटोडीकेंओ
उजेकहीयो।सायरश्रेंचरलोछिनमहियो।
महासंरेनंसुंकोईसरें।चरलपेलपरब
तसबचूरें।।२१२॥ ऐसीवातकागजबभाषी।
पंषीजातिन्नयेंसबसाषी।समरथकोइवि
ग्रहकरिहो।घूहरराजकाजकितधरीहो।।
।।२१३॥ वायसमतोमिटाकें।पंषीचलेंपुला
य।घूहरआपनेंयप्यसुं।बेंसरह्योएकगय
॥४॥ [illegible] ॥ घूहरनांमअरिमर्दनआहीति
नआपनीसबसन्माबुलाई।।श्रेकेगोफय

पथवेंगे आनी। उनसुं बोलन लागो बानी॥१६॥मे
घवरण काग इहां आयो। उनमेरो सब राज गमा
यो॥ पंछिन का जजरी सुध आई। उह मेरो रिपु प
रन आई॥१७॥ स घरे काग जाय करि मारो। पा
छें आपनो काज सुधारो। मेघवरण कें जीव त
घेरीयो। कें सब मारो कें सब मरीयो॥१८॥ चली
सेना जहां काग वसेरो। रुंध्यो वृक्ष पच्यो तिहां घे
रो॥ निस अंधारी वायस रूलें। घूहर जहां तीहां
तें फूलें॥१९॥ काग हजार तहां मारे। लागे अव
रषेत तजि न्यारे॥ मेघवरण हि वे गेउ जहं उ
डी॥ कहि निज इक वृक्ष जाय कर मंडी॥२०॥ वेग

हीं वायस बोल पठाए॥ मिली सब लें उणगे रजआ
ए॥ बोलो हो को नमंत्र आव कीजें। दिवस च्यार ज
हां ग्रहरदीजें॥२१॥ मीठे वचन देह हमसुं साक
रा॥ जाय रहो मिल उलूक कें चाकर॥ वहोत काउ
आं नो ढिगला करा॥ जारो गुफा मा हिंस बसुस
ता कर॥२२॥ श्लोक॥ अप्रमादेन जीवन। गात्र
स्वायस्य सुख पता। अरि नासयते नित्यं यथा
मली महाड में॥२३॥ चौपई॥ सक्षम रूप लता दु
मच्चहें॥ को मल गातें तन वहें॥ स घरो वृक्ष
पसर कर घेरो॥ पाई मूल समुलो फेरो॥२४॥ इ
ह विध काज वनिक बुध कीजें॥ गुरु सुं मेरें

ताहि विसनदीजें। सबकागेमिलकेंसीखदीनी। मेघ
वरणकें मन मांनी ॥२५॥ चलेंकाग मिलवेकुंका
जा। जहांआए अरिमर्दन राजा॥ सो सें बेठवसी
ठपगए। कहेमेघमंत्री मिलवेकुं आए॥२६॥
गयो वायससंदेससुनायो। राजा सुणतपरम
सुषपायो। आपनो मंत्री लेन पठायो। आदर
मानबहोतसुंआयो॥२७॥ मेघवरणजहांताह
रआयो। राजा मिलेंआंकउरलायो। कुसर
कुसरकरवुझेंदोई। बुधपकीषेलनजाणेंको
ई॥२८॥ अरिमर्दनसुंवायसकहे। मेघमंत्री
सेवाकुंरहे। दियोगेडजुंमंदिरसऊं। निसां
दनडुआरंनोवतवजुं॥२९॥ कागकहेौ ५५

सोप्रहरकीनो। जोमांग्योसोपहिलीदीनो। मंदि
रमिसकाठ अंगिठो ई। जेपरपंचवनजांणेकोइ
॥३०॥ चंगेरीदिगकाठकोकीनो। गुफामांऊकरि
पावकदीनो। प्रहरआंधेदिवसमसऊं। गुफा
मांऊजलबलकेंमूकें॥३१॥ मरतश्लोककहे
उनएसो। परवविरोधसनेहकहोकेसो। जाते
मोहिछलीतनआवें। सिंघनीसमेयामोहिव
तावें॥ ॥श्लोक॥ सिंघनीमाकुंबोलेंवा
नी। तें मोहिकाग करिजानी। एसीवुद्धिआई
तो अबकरें। जेसेंदूधडासदोउधवरे॥ ॥का
मसिंघकुंऊसरनरहोई। उत्तममध्यवूकेंलो
ई। यांवकायमनरवऊफुलेंफलेंहां। तोरसेंआ

11.

॥४७॥ कलादाषकं करिहै ॥४८॥ कुषमंडकको लता
कहावै। ताहि ● चिकारस चर आवै। वेपथर
वं धापा पथ्य जपावै। विफलचीक्सं नगमावै
॥४९॥ सुनमणवचन वरुंको ऐसो। ५ वतेअच
लजानीइंकैसो। कैसो सुपहिलें हाहारी। वच
वटरूं तो कलकं गारी ॥दोहा श्लोक॥ उर्द्धनेउ
रवलापन। पूंससिव्य जनो नपि विस्वासं चप
येदग्धो। बाल चक्रजरूसि ॥७॥ चौपई॥ जुटेहे
यचोर जिहि घरे। सो कुनिसाथ्य देषत हाडुरें
उनके आयक्षेसाहाबाजे। फूकें तक्रनथकें दा
ऊ ॥५०॥ दोहा॥ पाल घटें सुरव मर चालें। ताहाक
रयीयाय। सुणहोमगतें मो वचन। ताकंसि १६

धनषाय ॥५२॥ चौपई॥ औपमुकूऊषेतननहीं भै
सिघचरणे आयकरि मेमे घसिहोइ तेताहिन
मोरी। नइजातिरसें मारें ॥५३॥ आगें जाय ताहि
जोगहियो। तोफुनि सिघ नीमकि तलहियें। मा
गेंताहि देषकरि गर्को। तो ऐसें करतें कुलल्को
॥५४॥ श्लोक॥ असारस्य ज्ञारीरस्य। वाचा सारस्य
जाविनं। वाचा विचलंतायेन। तेनसारुकृततहा
रितं ॥५५॥ चौपई॥ सब हाये नि असार जकहियें
झूठें वचनरवार षकुंदहियो। झूठें वचन नहा
न नरक हायें। सो आपनें सुकृ तकुं दहियें ॥५६॥
सुनत वचन मग मन सच पायो। तजी आस
सिघनीपें आयो। अब ता [illegible]

१७ तोपरतीतकाहिसुनमरिहूं ॥१४॥ सिघनीमुख
लायोउररसीयो ॥ तुंतोप्राणनेहमनवसायो
तोकुंमेंदीनीअंदेह ॥ तुंप्रवसुखअल्पपरमसु
नेह ॥१५॥ मोकोरसलेंतुंसुखकारी ॥ मगजीअ
जीकेंसिघनीनारी ॥ जाकोमोहिपरेखोदजिं ॥ तुं
ड्पकोटिरसुखलीजें ॥१६॥ सिघनीकोतन
विरहेंजारें ॥ मगकेंजीयकोधरकनटारें ॥ मि
टेंनबाहसिघकीजोरू ॥ प्रगटेंनहाकामरस
तोरू ॥ ॥ म ॥ वाद ॥ [illegible] ॥ तोतन
औरहीचाह ॥ मोतनकछुअबरेंदहे ॥ तुंगुंगे
कीगाह ॥ मनकीडंसमनमेंरहे ॥१८॥ दोहरा ॥
सकूंनतेरेकारणें ॥ हमआएयेंहहा ॥ मनकीडं ७

समनमेंरहे ॥ तुंगुंगेकीगह्य ॥१९॥ चोपई ॥ तोतन
चाहिस्कूरतसुमंडें ॥ मेराजीयकोधरकनछेडें ॥ थो
थेंप्राणकामसुषग्रासें ॥ तुंदीपकप्रगटज्यौतिमरज
नासें ॥२०॥ थोथेंधामधरयोनहीसकें ॥ थोथेंकामं
स्पानपनहीसकूं ॥ थोथेंपंडितआखरनहीसकें
थोथेंपुत्रकलत्रनहीसकें ॥२१॥ सिघनीवाक्यं ॥
जानदेषीविसषाइमरियें ॥ तुंतूनकाजकहालु
करियें ॥ मरबोटयोकोरेंनविनामतमरीयें
निस्वारथथोथोकितकरीयें ॥२२॥ कवरोट ॥
बहोतकथ्याकरतोरसफीको ॥ लागमसमयो
सरसअतिनीको ॥ सिघनीमृगबहोत्रांसरिझा
यो ॥ त्याकोसबसंदेहमिटायो ॥२३॥ वसिकोतो

रतीकेरसेरंगराता।२४। बंध्योप्रेमकलुकेहेत
नञ्चावें। एकविनञ्जानगमावे। सिघनीकारण
ञ्जाञ्जपावें। मगकारणबकुञ्जावसेतावें।२५
बंध्योप्रेमकलुकेहेतनञ्जावें। एकविनञ्जानग
मावे। सिघनीकारणञ्जाञ्जपावें।
पहिली॥

पहिलीमरतञ्चरतनहीचोरी। ञ्जवेतानेयोसिह
लुगारो। संगतिकोफलपायोपूरो। सरांकेसंगञ्च
यरसूरो।२५। चौहावाघदेषमगदोरे। सिघना
मगघावञ्चसंफीरे। जेसुखपायसेहजकेसर
णी। तिणतेवजकेरविधकरणी।।२६।। ञ्जासपा
सपशुरहेनकोई। सिघनीमगरहेवनदोई। ऐसे
नएदिवसतिहांकेते। दोयमांऊसनएकोचेते
।२७।। तोलुसिघसेलतेञ्जायो। सिघनीताकोञ्जा
हटपायो। कितीएकदूरसांहमाञ्जाई। करनीञ्जा
दरवेहेनवडाई।२८। इणञ्जवंपा। तोलुममजेहे
नारीजातिसिघकितषेहे। मृगामारिवेरलुफ
ल्या। चपलाईतनकीसवफल्या।२९।। मीथोमेर

के वीधो मेरें। ताको दोस कवण शिर धरें। हलैं च
लें न टरें न हारा सों॥ आयो सिंहदोरि मृग मा
र्यो॥ ३०॥ मालती वाक्य॥ कनक सधु ज्ञु इह कौन त
विसासो। ऐसी विधनो हो मृग मारयो। मो सुंए
ह परपंच न कीजें। एह अ संगमो पें सुन लीजें।
३१॥ जा दिन सिंघ सेलतें आया। सिंघनी मृग ले
हुरायो। घरी च्यार सुष सुरत जकोने। फु
नि जलपी वें कें चित्त दीनो॥ ३२॥ न री ती स्वल
आए दोउ। मृग दोय द्विग देष्यो सोउ सिंघ
नी बैर दोयपें मारी। आई मो न टरें न हारी।
॥ ३३॥ सिंघ उं कें दीष जाणी हिरणी। मुरष बुध
ता हा करा करणी। हाय हाय कर मन मैं रावे १९

सिंघनी मलीन वदन मुष जोवें।॥ ३४॥ जासुं जेम्र
व काज कहावें। मो देषत मृग प्राण गमावें। अप
पि नी इतनो नहा चीनो। करता कवण बुद्धि मो हि
दीनो॥ [illegible] ॥ जासुं जे प्रब काज॥
जो प्रीतम अंतर धरुं। सिंघनी कें कुललाज। जो
मैं न पहेली न हा मरुं॥ ३६॥ मृग एपर मर जाय की
जो लें के सा नइ। साचा प्रीत सुणाय मृग नैय
णों देषत मरुं॥ ३७॥ मृग मर वो एक वार जो आ
व न को लाल च करुं। इह न हो इ किरतार। जो मन
क हुं अंतर धरुं॥ मो गल बंधी प्रीत। मृग उं
तो सो चा नइ। जब मर वो इह रीत। अंतर जन प
रें दई॥ ३८॥ [illegible] ॥ उदय गिरि यदि जो तु पश्चिम

यांदिशायां। विकसितयदिपद्मं। पर्वताग्रे शिला
यां। प्रचलति यदि मेरू शीततां याति वन्हि।
तद पि न चलतियं त्याय नी कर्मरेखा।।४०।।
विध केअंकलषे कुमजोई तामें कछू
न अंतर होई। मृगकी मोत सिंघनीको सो का
जितदेसनी यो चयाइक ताको।। ४१।। बेगहि
रलसिंघनदेष्यो। मानु सिंघपकवो करि लेष्यो।
जीवतो मृगसिंघ देषनरहे। कसें बोहसिंघको
सो हे। केहरी मनमें एह विचास्यो। तो लुं मृग
सिंउहांठा मषं श्रास्यो। सुणत सिंघको पच हि आ
यो। कर गृहे उवं तीय कुं आयो। तो लुसिं
घनी आफी आई। परीदारि सिंघन परआई।

९

फुटेसीगदो ऊंतर आगी। नीकसें पीठ सें लसं
लागी।।४५।। चमक्यो मृग उग्यो सिर आरी। सिंघ
नीगारी कोट संफारी। निकसी आंतन करे जोफू
टी। वचन प्रमाण कीयो तन छूटो। परब्र
तशिला परें ज्युं आई। मालुबीज सर गतें धाई।
बदिरगिरेंदकुतें जेसें। सिंघनी मन की नो तन
तेसें ।४६। सतियनको वचे सो सत करि है।
ज्युं पतंगदीप गतनजरि हे। तो लुं सिंह आय
मृग मास्यो। सिंघनी कारण मुंठ पछास्यो।।४७।
जेसी गति कि है कार कीनी। वचन प्रकार धा
इ इक दीनी।।४८।। मालता बांकां।। हसारथो।।
मुष देष्यो को प्रीत। जेसी तो सुकुको करे। इरु फु
नि उलटी रीत। मृग पेहलां सिंघन मुई।।४९।।

२१
१८

कौ॥ यादिनं पति तेबिछ माता गरस्तवा
सिनं । तादिनं लिखतो लेख । हीनवृद्धि सुख
दुखं ॥५०॥ [illegible]॥ हीनवृद्धि सुख दुख है
होइ सो नही मिटे जहां तहां सोइ । रोसें हसें
न मो नें कोइ । तेरवि शशि नीपरें होइ ॥५१॥
मधु कें हंसि हाथ्यो वनठें मौ । मालती कु पा
कुलसव मेंडा । सकति मधु उंडहकें तविसा
स्यो । एसी नई तव मृग मास्यो ॥५२॥ मालती
वाक्य ॥ दोहरा सोरठा ॥ मधु मरवो एकवार
श्चवर बहुके कंध चढि । सबदरस्यो संसार
मृग उपरि सिघनी मई ॥५३॥ इति श्री मृग
सिहन प्रस्ताव संपूर्णं ॥ मधु वाक्यं ॥
पद्य ॥ सिघनी इतनो कहा कारण कीनो ॥ इन

२०

मैं सुख संतो सकहा लीनो । त्रिया की गति वि
वेक मैं हूं चीनो । मृग मराय पोतें जीय दीनो
॥५४॥ मालती वाक्य ॥ सोरठा ॥ यह उहपुग त
न होय । को न सियारी ज्युं धरे । सिंघ मांकी भो
सोय । फुनि सिंघनी होय सो करै ॥५५॥ कवि
रो वाच ॥ चौपई ॥ मधु समयो कहि कहि स
मझावे । मालतीके जीय एक न आवे । फु
नि फुनि वेहि जलेछन मैं है । नोरी मेहें राटे
कन ठेहे ॥५६॥ मालती वाक्यं ॥ मधु कारन पि
रवां नी कहे । हुं मेरा जीयका एक न लहे । वि
रहें श्च गनि मो तन लगाइ । फुनि ए तें उपरि
इ खदाई ॥५७॥ मो मन मध्य सकल [illegible]

नी। मो तन चित्त वत नेकन हसहा। मैं तनम
नते। परिसबदा नै। नेक हु सुह गाउ कित
कीनो। [illegible] मधु जपें सुण माल
ती आयां नी। सोषा बुद्धि न होइ सयां नी।
जें तो इक प्रेम हरि मुष दरसें। तेतो आक
मृ नो होत न फरसें। [illegible] चंद चकोर ज्यूं मंद
नंद षो। कुंनिर विराज त्रों बृजकुं नप षो।
सुंशिषि मि घदरस सुख पावें। अंबेन परसें
सब चूम गमावे [illegible] नणें
मालती मनोहर मुरषा। एसो वरत ग्रहें कुं
पुरषा। मैं तेराजीयकी सब जोंनी। तें तो नप
ति कुंवर की गोनी। [illegible] नप

मालती कुं बूझें एसो। नपति कुंवर को संम
यो के सो। के सें नई सो ई सुनिजें। तो कुनि
ना को उत्तर दीजें। [illegible] नप
ति कुंवर कनेंराजा। करण नांम तस सब
गुण बाजा। पणें एक विपरीत भ्रत कीनो। जे
सें काहूं कबहूं न कीनो। [illegible] करें व्याह त्रि
या चोगान करे। उलटी रीत हो ई मन धरें। जो
त्रि बल आय प्रथम कर ग्रहे। तासुं सेज रम
न की कहे। ६४। सपरा निहचे बेंम चितें। ए
क एक तन नोंहि चितें। पुरष तें वचन न को
ई कहें। सुं गुंगे की गांह मन मेरहे [illegible] वे ह
जो नें मेरा कर ग्रहे। त्रिया के मन कहु भाव

रंवहे। सबला प्रथइतो कहा जीनें। नरकंतो
नाहुरकरि ठांना॥६७॥ एकदिवसइहविधवें
वाहि हूजें सवरहूसरी चाहै। तासुंकुनिचें
सोविधकरें, तेजंनारिजोउसंकनधरें॥६८॥
युंहोकरतसाविद्रियव्याहा। कुनिहूजीको
ईफेरनचाहा। जोंयेरूपमंदिरमेंनावें। ता
राउंकोताहिनवावें॥६९॥ विनअपराधनि
याउखदीनो। नांहनवहोतजोंहवाकीनो
आपकीरतजबचिकिदिज्ञोंदोरा। करणनो
मके। जनलहेंगोरी चलीबातसोर
गमेंआई। सूरसेननपसधजपाई। विनअ
पराधसाविग्रियछंडी। जीवतनरतारह

२२

सबरंडी॥७०॥ सघरेनगरलोकयुंकहे
कुनिरनवासमोंझिसुथलहें। सूरसेनको
धायकेंबारी। पदमावतीमांमनसुप्यारी
॥७१॥ उनेंइहवातम्रवनेंसुनपाई। करु
णकेंमनसाधाई। सषीबुलायतानपेंगा
ई। कहो पदमावतीजेसीबाई॥७२॥ केप
णरायकेंनिहचेंवरिडं। दुजेंकवमनोहि
चितधरिडं। तातविचारइहेंचितदीजें।
भवनसुनतकहविलंबनकीजें॥७३॥ स
खीचलीयरायपेंआई। नपकेंम्रवणेंबा
तसुनाई। पदमावतीकरणकुंवरिहें। नह
तरप्रांनघातकरिमरिहे॥७४॥ पिछेमो

हकलो ऊं आई। कुंवरी इहउपाई। जाको मो
हि न तरदी जे। केतो आपु जाय सुधि लीजे।
॥ ७५॥ राजा सुनत महेल में आयो। अपनो
सब परिवार बुलायो। नाई बंध ऊंट बस
बानी। उन सु बोलन लगा वानी॥ ७६॥
पदमावती कहि मोहि पागई। करण व
रण कुं मनसा आई। उमुस घरे मिलि व
र जो जाई। निरवार थइ हको न वनाई॥ ७७॥
स घरी नारि आह कर खंडी। जो गेंबु रुत
ता परि मंडी। एसी बुद्धि नकी जे वारी। आप
हानि अरु कुल कुं गारी॥ ७८॥ सिद्या न ला
गे कुं मरा तुं बुझो। पदमावती नेह कहा॥

सुझ्यो। पुछी मोहे न को ई राजा। करण वरे
सो कवण काजा॥ ७९॥ जाके ग्रह त्रिया सुख
नाहि। उंकी तकारण इवे ताहि। वडे य डर
जनकी बारी। वे अपनो न व सुष जु हारी।
॥ ८०॥ तिहां जाय उम को हा सुख पे हो। पी छे
उग मुरी सा षे हो। कहो मान सुरी उंक ही
ये। हरियल की लकरी कित गही ये॥ ८१॥ प
दमावती वाक्य॥ पदमावती सरखें कुं कहे
ले षें कर मसो ई फल परि हे। ऊंको को कहो
न करिऊं। मन मेरे सो ई वर वरिऊं॥ ८२॥ दो
हरा॥ मन क ध्रर को ऐक गति। कौतुक हो हजा
र। कां करकें च नन उपरुचे। गुज मिरच अक
सार॥ ८३॥ चोपई॥ ऊं मरा जन न मलता वाढे

२५
२९

सुखदुख: करम आपनोकाटें। तुम मोकें व
र जो मकोई। नलीबूराकछु कें ई॥८५॥ मर
गर मकोराहरायलकाठा। त्रियाकी गति इं
न कुं तें माठी। केतो आपनो जोन्यो करें। नहा
तर डांण घात करि मरें॥८६॥ वचनकें व
राकें सुन पाए। नपनि सरस बेस मजाए। वि
प बुलाय नीजेरपगाए। सबे मंड नव्याह
नको गए॥८७॥ लगन सुमकूरत सोध्य पग
ए। उततें करण व्याहनकें आए। मंडप फर
सी मैं हलु मैं पेठें। पाणी ग्रहण हथलेवें बैठे
॥८८॥ फनिच वरी सबहू नाकीनो। बोहेतक
रणकें रायचो दीनो। कीनो सबें आचार वि
वारा। जेसें आपनेंक उव्यवहारा॥८९॥ मेहे

२४

ल चटारी सुधेंउपी। अगर चंदन धूप सुधोपी
मिली षवासण सब ही आई। पदमावती सुंह
णे रपगाई॥९०॥ करणकें सुमसें असुख
कारी। कुंवरी जाय मि हो अनुसारी। पढी गांलेप
टी ढिग आरी पलपें गंटक कोरि बेठी बारी॥९१॥
वे नरेष सरवी वेजे लागी निरषतें न मनसुखें
त्रम जागी पोहर एक लुं लछि नकीने औसंको
नि नाषसी दीनें॥९२॥ बोलेंनही डोलेंनही को
ई चित्र सवार भरे मानुं दोई सुधेंपी ननाहि
करफरसें मानुं अंगदा फवें तरसें॥९३॥ वे
नरेष पें सहो न जाई वचन भेद इक कोकस
नाई पदमावती सबेरस षोई जोजतकें बरा
नारी होई॥९४॥ रहें तो सातिसाबिजनछंडा। 26

२९

उं इक सगमीता परमेंडी। सागिहा सागिअनल
मिल्हि जोगी। बासिगमी बकरको नकें लागे॥
॥ मेंनसु सत्र रिदे हसें नरी। कुनि सुहार
हेंनदीसत हो बारी। के तो कोई कबुध्य विचा
रो। केंवब नकंषुटा गारो॥ १८॥ दोहा॥ पु
यमसमा गमरेणकें। जीयज नड रपेंबा
त नोरनयां पिठ तायहो। वहेंसागिनके
स्वाल॥ ॥ षटरस स्वाद च षनक हा
जांणा। चौ धोकहा पंचरंग वषानें। जा मेंम
ति तसोई बूझें। विरह व्यापा वदन कहा
सूझें॥ ९०॥ परमानतोतो कवीत्त॥ सेज
समा रीपहो परस्वा। सधें उपक संचार अ
रकंं ऐसे क्या करू। सांव बेंल मोहिमार २५

अंअन करि मक्क नकस्यो। नेहगोधस्यो
उतार उरकूं ऐसें क्या करूं। सांव बेल मो हिमा
र॥ ॥ ठेंकं पंजें मे धरी। पाउपासी गहि हार
अंसार कहा करु सुं करूं। सांव बेल मोहि मार॥
॥ नेंनसेन चोंपदे रहा। उर चो चर दाया भार उ
रकूं ऐसें कहा करूं। सांव बेल मोहि मार॥
पत्यंग बिछायो ऊटकरि दीपक रही नो बार अ
वर कहा करु सुं करूं। सांव बेल मोहि मार॥
प्यारी प्रीत मपेंचली। सफासो लबंगार उरकूं
ऐसे क्या करूं। सांव बेल मो हिमार॥ ॥ नष
सुबाके हलो पाहिरंगें। मोति नमकें मसमार अ
रकूं ऐसें क्या करूं। सांव बेल मो हिमार ५

मुषेंतंबोल महमेहो। नेंनोंकाजलसार। येंर्नो
सु ।ञोरकुंएसेंक्याकडुं। ञावबेजमोहि
मार॥ ॥ सुखनोगवनचलोकिवें। आईमहि
लमझार। वेंनांसुंनिसुकंयाकडुं। ञावबल
मोहिमार॥ ॥ जारीजरपोठेंभरी। थकोरहोव
कुवार। हाथलेईपलंगजदीयो। तोहिनञ्ञा
योसार॥ ॥ मेंजलपलीकोचर्ड। हिगयेंकाव
तिरम्या। जोलाकंतोबूडकुं। गडुंनोविसहर
षाय॥९॥ तेनेंरखासखीवाद्यौ॥ना पदा।
जोलुबुध्यनञाप जाम्यहोई। तोजुकहासीषा
वेकोई। बलेंकहेंतिकेवरेंविचारें। सीष
दिइसोगांवकोहारें॥१०॥ तेंवरठंठलीय

हेंमनसुं ञावरवालमोहतुं किनसुं। तुंनेलाक
रणीफूललेहें मेरोकहा गांठकोजेह॥११॥ तीन
पोहरनिष्ठिसमजाई। चेंनरखमनमेंरूषपाइ
एलरकोलसोकुंइंजेहें। मोकुंरोससनेंत्रि
यादेहें॥१२॥ लईगुलाबसुंचरीपचकारी प
दमावतीकेंपाठमेंमारी। चूकीउचकपराउ
रलागी। नपतिकुंवरकोसंक्याजागी॥१३
नीनेवसहरेंसबकोनें। दुखदायभोइस
वेंसुखजोनें। मधुमोसुंञेंसीकितकोना
मालतीरसञंगुरासुषदीनी॥१४॥ नपति
कुंवरञपनोपणराष्यो। जेंसेंवेंदसुरा
नपंचाष्यो। चातुरसुरसाता हिसुंकहाइं

२८

समफें विनाकुनगहाइं॥५५॥ इति श्री कर
णापद्मावतीको पूर्वालवसमापति॥
॥ मधुकवाक्य॥ दोहरा॥ सपतति
नषईबनर नारी नेहगरास्य कोराक्षवा
ऐषकर इसानग्रहायेहय॥५६॥ मालती
वाक्य॥

२७

॥चउपदी॥ तीयाकीननकसारतेंपावें। तोनर
लल्वायवेगढिगआवें। इहमेरेमनअबकलना
वें। इंकउकें कंऊसरस्तुं कहुगावें॥१७॥ श्लोक॥
नागिरि(सू)पतिकाष्टानां। नापगानां महोदधि:।
नांतकसर्वजंतानां। नपुंसा वामलोचना॥१८॥
चोपई॥ त्रिपतिनपावककाठबहुजास्यो। त्रिप
तिनदधिसिंधुकेंजास्यो। त्रिपतिनकालजप्रांन
कोलेंतें। त्रिपतिननरनारिकेंहेंतें॥१९॥ मधु
वाक्य॥ मधुजंपें मालतीसुनलीजें। सतगोडांदि
नकेतेइकलीजें। तुंअजोंणहोयवात। मोहिक
हें। सुंतननहारकें संसुनरहें॥२०॥ उंमहमगु

89

रुएकपाठपगाई। तजी तुं मो नृपति की आई। इह
जीयसी च विवेक न कूंं। अंभा नर्ह तो हि काह
सूकै।।२१।। मालती नाम।। कहि सुरगुरु ना(
दिदें साषी। गनपति वेद पुराण हा नाषी। अंडज
षां न देव हूज्य राषी। मधु कर पसुं सुंन धू साषी।।२२
एक गरजत तुंग पजंदोई। ता को दोस धरे नहो कोइ
नो मो उपजसी अंतर बाढी। जूग कुरजक कहां से
काढी।।२३।।कवरा ना न।। मंत्री सुत मधु मन ह
वि वारे। त्रिया वचन नकुं कहे तन हारें। मात
तीत न लछन सुं चाहें। सुं जल ने न जाइ वें काटें
२४।। न जोइं कन कुसुम वन जहां रूटे। न जाइं प
च चार जहां कुटें। न जाइ जे पान जहां दुरुषपाइ

२८

इं। निध्वार रथ पर मन न जाइ इं।।२५।।श्लोक।।
विना कार्येसु ये मूढा। गछंती परमंदिरे अव
स्यो लघुतां यांति रविस मापेय षा शशि।।२६।।
चोपई।। रवि कें गृह चंदो होइ मंदो। हरि षां
मन बलि कें गृह छंदो। शंकर जय सुदी साई
ए तो सुमन लघुता पाई।।२७।।दोहा।। बाबी सुर
य स्रूफ सर स्फरी। श्री पती सबे अनुपा। नी सारद प
र धन नतो। मए दोन लघु कंप।।२८।।चोपई।। मु
धुइहसो बुं मनकुं मन न गहायो। तादिन ये पवें
ऊन भईयो। कं जर षसो जुंठन छंडे। सब दिन
रा मसरो वर मे डे।।२९।। करे कि लोल षरत नहो
तारे। गोरे लेंपं जिन मे डारे। अरब पंषी रहे डा

३०

२८ लउर नंजें। पंषउ बाल्मा लुंय न गडें॥३०॥उ
उही आर बषर बर विरोहें। मानुं घटा में घन
सोहे। मीनां पांषमां लुंय न बरसें। सो जल मधु
पने तन फरसें। [illegible] नरहे नारि सुंदर वर नारी
मधुको चहितवे षके हारी। कर सिर कें चलि
[illegible]॥ए जिम जेंसें चिनवंत कें चलि इं
सिर लें।सें॥३२॥ मानउं मिलवा यथ मिला
नो। कोम का जषा सबें रुकानो। प्रगटे मेंन
केचकी तरकें झलकें कें चषा रातिं दल कें॥३३
मधुमुल बरि तदि षंकलंकों। जा डर कांमसोम
न का चकें सो डर जित तित मांहि आगे उर
कहा कावलणपरि जागें॥३४॥ तम कजरा चेटके २९.

गेह आयो। उरहो गाहर को खेल मिटायो। इतीद
बगाही गति सारी। मालती सुधदे रही बारी॥३५॥
मधु वियोग दिन दोय जीय कुंली। लेषो सबें लेग
ई तहां हूती। षेलण मिसें सब सषी बुलाई। चल
के रामसरा वर आई॥३६॥ सुनसषी मोवी ती
जीय जेंसें। पीव सुं नाहिं उकारुं केंसें। तन में बेद
न व्यापें जीय जेंसे। धोषें धाय चक्रत चिंऊं दिसें
॥३७॥ दू०. सोरठा॥ अंतर गति की पीर। को जां
णें कासुं कहे। तन मन धरें न धार किसकें उकारु
किसकें कहुं॥३८॥ विरह विथा की पीर। करता
विन को लहें। मो मन धरें न धार। प्रीतम जा कें
दरस विन॥३९॥ चउपई॥ मालती आय सरो ३१

वरंऊषा। चितवंतवि पति परें तिहं पंषी॥ सषीसक
लकें वदन विलोकें। मानुं चंद बिङं दिसें ढोकें॥४०
सोरठा॥ चकवी नयो विछोह। अरुनकमलसंपुट
दयो। चाहें रह्यो चकोर। दोषवदनछबि मालती।
४१॥ शशि देषिकें गर। रविके गहफाको सदा। माल
ती वदननिहार। ज्युं तेज रहित दिनकर नयो॥४२॥
फलेंमुकुंद विशाल। पंषी ही आभ्रमच जो हरपत
लगी बाल। सषीसकल ठिग मालती॥४३॥ नंगीवा
यक॥ चोपई॥ नंगी आं निपुकार सुकारा। मालती
यह संदेह तुं कारी। तेरे वदन ज्योति अति कंधे। अ
रुणवसबार जसपुट बंधे॥४४॥ इह सुनति मालती
मुसानी। नंगी का जक कहें फिरबानी। काव ही काटि
भ्रमसऊ रहाये। अलि बंधन बार जकित सहाइ

॥४५॥ नैगीनायक॥ सोरठा॥ परा प्रेम की पास का
रन ऊंकों रैमिले। तन मन आरपें तास। आतरीत
इह मालती॥४६॥ प्रेमडी तंकों लाज कीठ न पंछी
हो बंधपणसहें। तो तरि बाहिरी लाज। गिगन गहें
कं फिर यहें॥४७॥ अति रस रावी राग। घटनाद
सुमगथ्थकत। सरस न मुख उरलाग। प्रेमनच
कत मालती॥४८॥ नंगी वाच॥ नंगी प्रेम वटा
यव तायो। तातें विरह बीन उरलायो। तब लि
मधुमन सामें आयो। तन चपटा मो नुं कछु पायो।
॥४९॥ [illegible] विरहविथा
एकबार पेम च्यार चलके गई। जहां चकइ आ
निहुकार। सबद सुन्यो इह मालती॥५०॥ चोपई

चकई पाव पाव कहा जंपे। लेउ सास आहि कित
कंपे॥ मालती सबद सुनत सच पाई। चकई कूंवे
नी सी लगाई॥ ॥ मालती दूहा॥ करि मज्जन
तेगे सुनि चकई। प्रीत वियोग कहे कें सेंस कई
वरन पंष नाहिं नर एक। दिगहुंदु कित जो म
चिकमिशि वक॥ ॥ मालती वाइक॥ सुनि मा
लती कहें जलचर नो। मोपें परी राम को करणी
तो विचें उलफ्या नहा फटें। मेरो पाप को नपं क
टें॥ ॥ मालती वाइक॥ चकवी आजनिशि तो
हि मिलाउं। कं हिं हों तो पें मे कहा पाउं। मो विचउ
ल फटा नहा फटे। तेरा पाप रां मत्र बकटें॥ ॥ ५४॥
पर ई ख जारि ज आय सही नो। बुध्य कछुक रवें

गे तबली नो। कर पर पंच सेन्य करि चानो। चक
ई कंत मिल्यो सो कीनो॥ ॥ ५५॥ गाहा॥ धन सज्जा
जुनी रयणो। चक ई सु मिलत चकहा। चिरं
जीवो लेष करावो। मेटायाराम ले हाणं॥ ॥ ५६॥
चकई वाइक॥ चोपई॥ चकवी जं पे सुनरेस
जनी। उंबू रूं सो या नहा रजनी। जैसें मिल्ये
जो सच पावें। तो पंछी बकुरें पंजर नावें॥ ॥ ५७॥
संकट मध्य जें तो सच पइयें। को दुख सहें वियो
न सहियें। छुटें मन कें सें सम ऊइयें। वा गुरव
सें रस कित पईयें॥ ॥ ५८॥ मालती वाइक॥ तें वि
योग दुख दुष्य मिलायो। कुनि सें केत संकट कि
त चायो। पाव रकरत ज सबद सुनायो वागुर

चसकहाहुं बूझे ॥६०॥ मालतीवाक्यं ॥ सोरठा ॥
मिटत न सहि जस्वभाव । जिहि विधि जानेंसो
रहो । सिंघनी पसुत निराव । गजउथ्याकें जर
गरो ॥६१॥ चित्र नछत्र बरसाव । झरत बुंदर
सगु । झांपें नहीं । स्वातिसुत नितउठि धाव । सीप
सौं नकोनें दई ॥६२॥ नाउनिके सेंनाय । अंध
कार रवि दूर सलुं । चंद जोति बिकसाय । कुंभ
दकहा करनंतयहि ॥६३॥ नकईवाक्यं ॥ चउप
ई ॥ कुंप छिन चोरी बुधि मेरी । पढवें गुन वेंकी
गति तेरी । कुंचकोरहो यहुत सुख कितहुंको
मिली कयगमकी गति चकी ॥६४॥ इतिचक्र
संना ॥८॥ जैंतमाल सषी वेग बुलाई । चलकेरा ३२

म सरोवर आई । तासुं बातकहे मन संकन धरें
बुद्धिकर ताकहु विउत्पकरें ॥६५॥ [illegible] ॥
प्रम संपूरण सोय । दोजनतें कोउ नालहे । ता
जो जानें सोय । नाहि विधना घट निरमयो ॥६
६॥ चौपई ॥ दोयकें बीच वसि छन होय । साबोना
उरकहांइ सोय । मानुमान मर्वि क्रितपांना । ऐ
सो प्रांत न होई निदांना ॥६७॥ सषी दुराग्रमें आ
पडरायो । तातें मेरे हाथ न आयो । जबकहु
करनी कहें तन लहाई । तब तो अपसर वीयन
सुकहाये ॥६८॥ मालती वाक्यं ॥ [illegible] ॥
चिता उरांणां न सुखो न निद्रा को भाव राणोन

३२

नयोनलज्जा॥ चर्चाउरागौं नपितानबंधु॥ हुधा
उरागौं नबलं नतेज॥६७॥ चौपई॥ हुभारथमे
राअनुरागी॥ चिंताकौ मकोमकोहें जागी॥ लज्याउ
रमेरे नयनजागी॥ विरह विपत मोत नहें दागी॥
७०॥ मालतीवाक्य॥ जेतमाल तुं दिनकी वारी॥ स
बसखीयन मेजं मोहिप्यारी॥ तातें तुम्सो नहीं कछु
मेरो मेरो ज्ञानपसो वसितेरे॥७१॥ द्विजकेसक
ललोक नरध्यावें॥ देवेंदान सोई लंभीपावें॥ जाके
कवणं चेंदकें मोसुं॥ पीछें मनकी कहुं तोसुं॥७२
॥ जेतमालवाक्य॥ जेतमाल जं पैसुन बाई॥ ते मो
सुं इहकाक सुनाई॥ सबयुगआहि देवकें पंथे॥ ३३

द्विजकेंचरणसकलयुगवंदे॥७३॥ श्लोक॥ देवा
धीनांजगत्सर्वे मंत्राधीनां चदेवता तेमंत्राब्रा
ह्मणधीनां॥ तस्माब्राह्मणदेवता॥७४॥ मालतीवा
क्यं॥ चौपई॥ ऐसे मंत्र सखी मुख तेरे॥ कंजनको
यो लोक नमेरे॥ मधुमधुकरतमोहिदिनवीतें को
टितेतासकोनपरेंजीतें॥७५॥ ज्योंकस्तूरी मगन
हषाई॥ मुगतमाल गजकेंठनआई॥ मणिभरम
णिकी गति नांहिचीनी॥ तेरें में भई हगतिकीनी
७६॥ दोहरा॥ मगमद मुगत सुगजायनें गमुष
मणिराज॥ जोतेंकानिरधनचलें सोजीउतन
भावनकाज॥७७॥ चौपई॥ तोमोंप्रीणनहीकछु
कोतर॥ विधनादेह [illegible] हृदय अंतमेरे॥ मोपरतोडु

निहचें मारहें। पाछें मंत्र का जक ताकरिहें॥७७॥
जतमालवाइक॥ जत माल फिर उत्तर दीनो। तें
आप जस मेरो भरदीनो। तें परपंच मधुमो हिदुरा
यो। सो सब तेरे लष्य न आयो॥७९॥ मालती॥ प
वदि प्राण हठ प्रात। मेंमन वच क्रम में करा॥ पिक
वायस की रीत। तें मो सुम न में धरी॥८०॥ जीह
जी कें जिय लाज। नेद छेद तिन सुं कहें। सरें
न ताको काज। प्रातक पर तिहां मालती॥८१॥
चौपइ॥ मालती दोर चरणो लपटांणी। मेरे च
क सब बैठें मांनी। आब तार्के मरत जीवा वे। म
धु मुरति मोहि नयन दिषावे॥८२॥ जंतमालवा
इक॥ जंपें जेत मालती चोरी। आरति वंतका

३४

न बुधि थोरी। तें मनसा वाचि गुन बंधी। विरह ति
कलको मको अंध॥ ... ॥ नैनप रुप तिभा
त्यों धो। कौ मांधो नेव परुप ति। नपरुप ति मदो मन
ता। आधि दोको न परुप ति। ... ॥ जो ईज
न गति चौधकी सो ईगति का मांधमर मथम
तज चौधरा। आरति प्रण अंध॥ ... ॥ आरति
आपनी जांनकें। चरण पषालें षार। गरजटरा
समयो टरे। तें कन पावें नार॥ ... ॥ सति सा
दरशन मांनतें। फुनि न बनाय रिहाय। सा
रति विनु मालती। वात न बुके कोय॥ ... ॥
पइ॥ मालती जेंत मालतीन चोंह। मैं रिदादि
कवन मां विमकें। नकें आप तन नकें ईपसों

ञ्जाणी बात मुषतें वकहै ॥८८॥ दोहरा ॥ जीवनप
रउपगार हित । देषो धरणी आन । वें वरसें घ
नी पर्जे । जे हागिणि म जान ॥८९॥ देषमषा गति
ग्रंबकी । फलें विश्वकें हेत । वें इतें तें पत्थर हणें ।
उवें उतें फल देत ॥९०॥ कुनितर वरका गतिसु
णो । परहित कुं जर बाहि । धूपसहिं सिर आपणें
आवरां बांह धरेह ॥९१॥ श्लोक ॥ श्रो कार्यन प्रवि
कामि । अडक गंथ को विनि । परोपकार पुन्या
य । पापाय पर पीडनं ॥९२॥ नाराच ॥ अठारसर
लोकमाहिं मुनि भाषी । वेद पुरान सकल इह साषी
परउपगार पुन्य नहि एसौ । पर दुष पाप सम
न हो कैसो ॥९३॥ उभौ अजौ नुप विचारे कहै ३५

वमाई करतन हारें । जे तो आहि सहि जमु
लहन । उत्तर जाह करूं के दहन ॥९४॥ जत
माल छंद ॥ जेत विहसी माल नीउर लाई
कुंवरी जन मन में दुख पाई । धिर जराब
ह ठ जाय तेरो । करि कुंसबोल देसम अवमेरो
॥९५॥ कहैं तो गगन चंद गवि बंधु । कहैं तो इं
द्र मेघ जल रूं धुं । कहैं तो विन पावक अन
रंधुं । स्वर्ग पाताल सुरत्य सुं बंधुं ॥९६॥ कहैं तो
योगिणी बारह कारूं । कहैं तो गिरवर सुगि
र हारूं । कहैं तो उदधि पावक करि जारूं । कहैं
तो मरत्यपुरी सें हारूं ॥९७॥ कहैं तो वसुधा

वरणा चलावै। करै तो विणजूतमे घवरसावै
कहै तो अष्टधा तगीर वारूं। कहै तो सातस
मुद्र पीय मारूं॥२९॥ मलीन मंत्र होइ तेसब
जांनुं। सुर नर सकल बांध कै आनुं। जो मधु
नें कदेष वें पावै। पंषालुं गहि कें अब ल्यावै।
मधुकी सुद्धि रोम सरोवर पाई। हती देषजेत
पें आई। द्विज कुंवर। सुनि उठि धाई। मा जती
को महंत चित्त लाई॥३०॥ महा मोहिनी मुषजो
उचरही। वसकरवें की वानी चित धरही। चारी
वसबुध्य तो हरी। परहित काज करन कुं सरी
॥३०॥ लेंह कारा सषी दोय च्यारा। सखि की

मोहें सोलश्रृंगारा। मंजन चीर रसी उरहारा। कर
कंकन नेंउर ऊनकारा॥२॥ तिलक साल नें कदा
यो अंजन। माला मुगता फल मन रंजन। तन चं
दन मणि कें चक्का झलकें। पग नेउर कटि मेषल
षलकें॥३॥ करंग तें बोल बीरी मुषडारा। मानु
कीर पंकज निरवारी। अति चातुर मुषसा आसो
हें। जित चितवे तित मन मोहें॥४॥ अथ सोलश्रृं
गार लंकाव्या॥ आदौ मज्जन चारु। चीर तिल
क नेंत्र अंजन नें कुंडल। नासा मोक्तिक। पुष्प हारग
लितं। झंकार नुपुरं। अंगे चंदन लेपकं। वूक
मणि। क्षुद्रावली घंटिका। तांबूलं कर कंकण
चतुरता। श्रृंगार का षोडशा॥५॥ चौपई॥ मातंग

यंदपालतनसोहें। यादेषेंमुनिवर मनमोहें। स
रवनिकटसषीचलचाई। मधुषेलतदेषतसचपा
ई।१४॥ जेतमालतीकौ॥ पहिलेंयाकवचनचाषा
यो। केंसोचातुरसोईतपायो। प्रेमत्रसारचकेंस
रसंधु। पाछेंमंत्रसगतिकरीबंधु।१॥ जेतरांमसर
उंचारहो। मधुमिसंमधुकरनेंकहें। मालतीउक्त
मवृक्षतलराषी। एकहासइंजेंरसचाषी॥२॥ जेत
नीकी॥ दोहरो॥ पाफलेतमालतीजईजमरचेयें
मधुआय। प्रानपुरांणीछांडकेंरहें। कांयविलमा
य।१९। मधुवाउक. सोरठा॥ रहैमुष्टथरि मोनाबो
लौतौकछुसुषकरो। मधुकर हसनेंकोनाचनरि ७७
नफूलेंमालती।२०। सुनगसरससरसमूर। निरषें

उंमोतनइमा। मधुकरमंनकेउभोर। कितजाय
सोईमालती।२१। जेतमालतीकौ॥ सोरठा॥ षट
रुतबीरेंमास। सकेंतकुसुमकेंउपरयें। रिजें
ओकपलास। दासधरेंशिर मालती।२२। जेतपद
रिके आकपलासकेंटाई। सुघराईसंचराइ
पाई। मनमें घटीवढीनलरुफें। तोइहें पम्म
लेतेंसरुफें।२३। मधुवाकौ। रोगीहोइंमेंरोगव
सजंपें। तौविदत्रयोनहोयकितकंपें। मधु
करजोरेंमालतीनजाहें। आकपलासकेंटाइ
नलाहें।२४। जेतानी क. सोरठा॥ फलइंनआ
वेंकाज। कसुमकोईफरसेंनही। आपरआक

अकाज। मधुकर रिझै तासंु।।१५।।मधुवाक्यं।।
चोपई।। वनिता लता अस्रूपं फिता नरा। इनकें स
हि जआए इक धरा। तो तु एकन आश्रम गहे। तो
तुम लानको उकहे।।१६।।श्लोक।। वेदयं मणि
माणिक्यो हि मंजडित आभयं। विनाश्रमेन ते
नंते। पं मिला वनिताजता।।१७।।मधुवाक्यं।। चो
पई।। मधुकं जन सआ पतें सकूं। मिसकारि
स नमानके बूझे। मधुकरकों न मानु ताकि
सी। उतपति मो हि सुनावो तेसी।।१८।।जलमाल
वाईक।। सुनि मधुनो हि कथा कऊं आदि। मधु
करन मरमाल लीपा फल। उतपति कइसो तै ३८

हि सुनाउं। पिछें कहु एक तो पें पाउं।।१९।। महा
देव जब कांम कें जारयो। तस्म अंगार ब्भा रि
करि मारयो। जरत अनंग देषकें गोरा। अतिआ
कुल होय हो यदोरा।।२०।।दोहा।। शंकर को प
करि अनंग दहा। विकल भई बर नारि। वाम
कर लकु अंगुरा। जानो निमष कुसार।।२१।।
मंजुपदा।। नष नरको मजयो। हवी विसत
रयो। ताकें वसस घरो सुग हरयो। जो शिवकों
मद गंजन हो करतो। तो मोन सपसु एक गा
तसरतो।।२२।। जरि बरिको मन नयो जगजा
हर। नस्म अंगार हो गहर। पाउ लच्छमर
तासकें कानें। करता को मति कोन नचानें 40

१॥दोहरा॥ नसमातियाउलनई। कोयलाव
ऊंकोमार। ताकेंएमधुकरनचए। सोकरतेहं इ
लविचार॥२४॥ चौपई॥ दिगाऊंन्हऋसेंवेत्री
केरा। सोअवतारआहिं मधुमेरा। पाउलनम
रआहितुमदोइ। विधकेंलेषनजोनेंकोई। २५
पहेलाभूरवप्रानसुनाउं। पाछेंआवरवातव
ताउं। मनमथउतपति हेतुमारा। प्रेमनिवा
लनऊंअवतारी।२६॥ मालतीऊसुमवच्छ
तविफूली। प्रीतपुरांण सोसबनभूली। अति
रसलुबधिमगनचएदोई। अंतरदोयनवि
चुरतकोई।२७॥ कबऊंकसमयउकाजविन
फिरें। मालतीविनमनमथनहीजरें। होइ ३९

तीतआजजलेई। पाउलफूलभमर तिहांहोई।
२८॥ मधुरयणसमयोतिहांहोई। दिव्यदेहप्रग
टेंतनदोई। अतिरसुरतिकेलिजिहांकेरें। सुर
जउगेपावेंहतनधरें।२९॥ किसीएकदिवसऐसें
निरवेहे। चलिअंतरकेंभेदनलेहे। निकटसेंव
त्रीसबपहेंचाने। भमरमालतीतासनहजांने
३०॥ शशिरवसंनगषकरुतबीती। वर्षाऋतुशा
रदकालकेंजीती। कठिनहेमेंतबीतबऊचारा।
तिहांऊसारु मालतीबारा।३१॥ वैसेसमयेंओ
निऊलागी। साषाविषामूलनलुदागी। हिमजरी
अरूपावकजारी। प्रेमनिवाहनकेंअवतारी।
३२॥ सेंवत्रीजरतकछुएकवेची। दिनदोयआन 41

रहितनसाचा।मधुकरप्रीतमिलाउनपरराषी
जरतमलतीनयनराषी॥३३॥दिवसदूजेंका
नीफेरी।फ्रांनेंसबदेसेंवेत्राटेरी।मेंनिरषीगति
सवेंतुमारी।उमसुंप्रीतकरेंतिहोगारी।३४।सेवं
त्रीवाइक॥दोहरो॥नयेंविदेसाचीनानिरषें
रूठेंनयनसुं।गईप्रीतपहेंचान।कोमधुकरको
मालती।३५॥सुषदेष्यांकीप्रीत।कैसीतोसकूंको
करें।वेंकुनिन्यारेंमीता।जीयजीयेंमुएमरें।३६
जरतमालतीजोग।मधुकरकेंनायोनहीदिन
दूसरसोनसोग।लोकलाजवेंसबतजी।३७।दो
हरा॥जरवोमरबोकछिनहें।मधुपमालतीसे
ग।जुगबोहारनकरिसकें।तोनसम्वदावेंत्रे ४०

गा।३८चोपई॥इहविधवचनकहेसबजनकें।
कुनिसेंवेत्रीवरुकूंसकें।सोंकूंत्रायजातिहि
जवेई।मधुमोपेंसघरीसुनलेई॥३९॥मधुवाइ
का।सेंवेत्रीएतीबातकहाजानुं।जुगीचानिप
चासेकगतुंजिहाबीतीसोबातनबूझें।परघ
रकहापारोसनेंसूझें॥४०॥सोरठा॥जरतमा
लतीदेषमधुकरलोतबहीजरें।सोंपतितन्न
बलेष।मुएविनकोउनआवतरें।४१॥चोपई
मुएविनकोईसरगनदेषें।मुएविनआवता
रनपेषें।मुएविनकोइप्रीतनजीनें।विनसु
तावकोउबातनमीनें॥४२॥जेतमालतीकीं 42
सेंवेत्रातजीइकबातहठराषी।तेताकमेंनोंस्रा

गें सचनाषी जोए वचन करकरि गनाइ
तो साचो तेरे मुष सुनाइ ॥४३॥ मधुवाक्य॥
मालती जरत मधुप जर मिघटे। कुनि वाकि
नव पल्लव प्रगटे। साषा रूप भन सरत व
हो। मानु दग्ध नई नहा कबहो।॥४४॥ अलि के
कुंन पवन संग रहो। मिले सुरंग मग मारग
चहे। देषेहु इहां प्रीति नई काचो। मधुप जरत
मालती वाची॥४५॥ वन में सहे जु आपम
ति फूली। पूरन पुराण सो सब भूली। मधुक
र तो अपनो पण राष्यो। अंतर अपनो जीव
राष्यो॥४६॥ किवि एक दिवस वाही ऐसे करी। मा
लती बकुराशि न पावक जरी। तहां से वंत्री का ४१

कुसुनायो। अभ्यंतर को भेद न पायो॥४७॥ म
धुकर अपर अंत ति हां देषी। कवण जस बे
एक कर लेषी। औसें जो न होइ जो फ्रेरें। तिन घरें
आनि वात नवेरें॥४८॥ सारंग॥ मुरष प्रेम न
लाय। विन बूझे वे नैकरें। वे मधुकर वे नाय
का कुसुना वे जा सके॥४९॥ अली वाक्य॥ अली जा
य अंतरे षयुं बोलें। सुन सें वंत्री चूक हो जे जें
कहे तक उत्तर बहो तक जो भ्रमालती कुन आ
या मिलें तो लें॥५०॥ अलि मालती मिले सई जात कि
नी कहो तपर सपर वाते। जल मालसो मनमयो सुनि
लीजे। एका गृह एका गेह चिमदी जे॥५१॥ वारता इत

नीबातजमर मालतीकी। पाछलें जनमकी कहि
जेतमालबोचनीयें। मधुकं वरकंसुनाई। मधु
सुकनें बहोतराजीदुस्पानीकृ॥ बेसेसमयेंच्य
लीकासुंकहेंवें॥५१॥ अलीवाइका। सोरठो॥ तोतनज
रलोदेषि। मिंदेहीउपरेंदहा। विछुरेनिमनमैघ। सोए
तेदिनकेरहा॥५२॥ जमरवाक्य॥ तोमोप्रथनेह।
जांनिपरेंबूझा नहि। तेंकीनीगतितेह। सुनरपमांन
धातामहि॥५३॥ नापई॥ धरणीमांनधातागृहेंघरणी:
तेंकीनीमोसुंइहकरणी॥ त्रियतेंप्रीतकरेजनकोई।
मोहिपरंतरबऊोलोई॥५४॥ मेंमेराजीउतोपरिदा।
नोतिंपरपंचमोसुंइहकीनो। मेरीदेहजारहोयनि
कटी। तेवनमेंनवपछबऊपाटी॥५५॥ खंतरगति ४२

कीपीरनबूझी। मालतीतोहिकबनगतिसूझी। बा
जीगरसुंमोगतिचीनी। ढोलबजायवलसबकीनी
॥५६॥ पुरुषमरतत्रियाउपरमरें। पें त्रियाउपरपु
रुषनजरें। सोमेतोउपरेंगतिठांनी। तेंमेराजीय
कीअेकनजांनी॥५७॥ सोरठो॥ पुरुषप्रेमवसि
होय। त्रीयापरपंचपूरणगढी। देषीसुनीनकोय
नागरबेलमंडपचढी॥५८॥ जेतमालवाइक॥ चो
पई॥ मधुकरवचनसुनाइजें। सोउत्तरदेंहे माल
तीकेंसे। सोकुलिकुंवरअबनदेसुनीयें। अपनी
दासबसीचीकरिगनीयें॥५९॥ पुरुषकहेंसोसब
त्रियासहें। पें त्रियाकेंगेरवचनकितकहें। जंपेंदी
नवचनमधुकरसुं। तेरेंमिलनकेंमेंचातितरसुं॥६०॥ सारलो॥
उतपतिएकसमुर। प्रीतहितनउपरें। पहोबीनउगेसुर। पोखत
रहोइमालती

॥मालती॥वाक्य॥ ज्यौं कछु मनमें षोटि। तो साषी
झूंकर कहुं। कै तन रहें न षोट। कें फर सें मधुमाल
ती॥मनोहर वाक्य॥ मोतन तुम सुं कारण प्रगटे। जा
तुं नहा ज्यो तुम अरि निघटे। नव षंड सात समुद लुं
नटको। निशि वासर कंऊ नेंक न छटको॥६३॥ ग
हे पुरुष ज्यो दुष पाए। पंकज कों उन सुष वताए।
पंषी नवर कों निरति देषें। तो विन सवें मुनिक
रि लेषें॥६४॥ ज्युं निशि उडुगन चंद विहूना। फू
ल वारी चंपक विन सूना। रितुवसंत पिक विन न
हो नीकी। वर षार तिदां मिनी विन फीकी॥६५॥
सेन सुनट घन पें न पनो हो। सरवर पंकज पंषी
विन तो हो। मणिधर जाल हेम विन चूनी। त्रिया ४३

न वयो वन के तविऊनी॥६६॥ मालती कहुं नेक
रिसु ना वें। पंकज कलि कीं सुधि न पावें। सब कं
मि हचें पुंम गमाउं। पति वियोग कें सेंस च पा
उं॥६७॥ रटत रो मनो मकि सन हरिहर। ज्रास
पुं संकर ना कें कर। मधुकर पी तेहत चित भारी।
एह वचन कहि देह उजारी॥६८॥ मनोहर वाक्यं॥
पवम पा तप्रीत दृढ राषी। दंपति मिलें दइ ति
हां साषी। अमन को आपदो सन काढें। कोइ घटें
न कोइ वाढें॥ सोरठा॥ मालती सों में नेपु
म। मधुकर सें प्रीतम न हो। को उघटें न तम। म
न वा वाचा कर्मणा॥७०॥ दोहरा॥ पवन पषम
धु मालती। को उघटें न लेष। मन सिं काग दरत न

४५ मिस।एहपटें नरपेष॥७१॥चौपई॥ऊमबचनमु
६३ निकेंश्रमजागो।अलिमालतीगगनमधलागो
कुनिअबतारवणिकग्रहलीनो।इहप्रपंचक
हकोरनकीनो॥७२॥मालतीजनमपतिग्रह
बरिका।तुमतौनरएसाहकेलरिका।तुमजाता
हांअंतरहोई।मेरासुषनपाईनकोई॥७३॥रा
जावणिकव्याहकेंहोई।इहविपरीततेरेजाय
कोई।एसीमधुतेमनमेंबूझै।फिरताकीगति
कछुनसूझै॥७४॥तुमतौआहिदेवअवतारा।
तातेंजातिकरेंकोउन्यारा॥मोनिकरेंकराचक
रिविचारो।कंचनवनिकऊँजोतनजारें॥७५॥ ४४
देवनकोउनपतिसुनावांनिद्याकहाआपसु

षपाऊँ।एतोमोपेंकहेंतनआवें।जेतमालमधु
ऊँसमजावें॥७६॥मधुवीकवा॥दोहरा॥सबेंस
यानपछांउदें।जेतमालसुनिवेन॥प्ररबलीपुह
सुंगई।सोअवतारसुरसेन॥७७॥चौपई॥प्रर
बलीउमसबेंविचारो।अबतोजादगयोवण
जारो॥गइतिधिऊंकोनवीबूझें।नाकेंजेतस
अयोनपसूझें॥७८॥राजामित्रसुन्योनहीकोई
तीनलोकमेंबूझोलोई।काऊकरेंनकोनलिख
ऊँनीकेंजेतस।करिहेंनपकीप्रीतनआगेंस
राहें॥७९॥इहक्षिप्रजातिआरूनपबेंसाईहनहा
प्रीतसेंप्ररणकेंसा।जेंसीलताकरेंलाकरिहेंता
पूरहोतअकायनचराहें॥८०॥कावय॥काकेसा

6

४६ चौपई तकौर बुसतो।कौविधेयंमद्यपेतत्वचि
ता।समेदौतिस्त्रीबुकामोपउगति।राजामित्र
केनदृष्टंश्रुतं वा॥८९॥चौपई॥कागजसुचिसु
लषानहाकोई।जुचोरमेतेसत्पनहोई।विहादल
कोईस्रुरनदेष्यो।सुरातनकोइचितनपेष्यो॥८२
श्रमसातविनषाईरहो।अगनिकाठविनजारे
देहो।कुनित्रियकोमसालकितहोई।तेसेराजा
मित्रनहोई॥८३॥सारंगी॥राजामित्रनहोय।व
ज्योजायकोईकहे।मनगतिलिषेनकोय।गज
दसनवारिजकमल॥८४॥जेतमालती।इकः॥चौ
पईः॥तेदछिनलछिनचौचनधारे।मालतीतो
अकुलीनविचारे।पूरवप्रात्तजानिचितधरि
हे।नोहितरवणिकमित्रकदाचन।प्रज्वालिता ४५

निकेश।नि।नोअंगारोनन्समय॥८६॥चौपईः॥
यारितिनारटरेनहोअेसे।वणिकमित्रकेरा
गतिजेसे।जेसेजरतकेनरि।नस्मनहोईतन
परतअंगारे॥८७॥प्रभुवाक्यं॥तुएवातकवन
परिकहे।पनंगतहानदीपकरहे।राजकाज
केवातेन्पारी।कोबुझंगुनकोमारी॥८८॥सा
षोजायवातकोकोनी।तापीछेउमकरोजको
नी।देषीसुनीकबकुंनकोजे।अपनेकुलाअ
मचितदीजे॥८९॥श्लोकः॥दासेसरागोधरा
परस्परविरोधना॥नहिविप्रराजयोगपा।तिस्या
योग्पापुननपुनन॥९०॥चौपई॥रणमेविपूनक
बकुंलेरो।परस्पोरे [illegible] प्रतिविग्रहकरे॥

47

३९

४२

स्वारथत्रिया घणी अति बाढी। तातें जीव कपा
लें चाढी॥१९१॥ जुं चकोर पावक जब करै पंछी
अवर पडत जर मरै। राजकाज गति सेक न्बु
झें। तो उं जीव मांगवो सूझें॥१९२॥ जतमालवा
॥दोहा॥ मधुए वचन मन कू मन धार। आपना गर
जस कू तेग्यारी। तें मदो उमिलण लिष्यो फिर तार
जब तन बागा सो रूपार॥१९३॥ नर अति आप स
या न पकरें। जो तुत्रीय सुंको मन परें। कवलक
टा कू बां ण उर लागौं। पांन ध्यांन चिंता त्य जजा
गें॥१९४॥दो०॥ तरुण पुरुष गहें वेद विधजो
लुकरें सयाना। तो लुतरत्रे देंन हा। त्रिया हग्र वारि
लुवान॥१९५॥चौपई॥ मधु सुं वात न की ऊर लाइ

४६

सषी पंगाय मालती बुलाई। औ चक्री औ निदां मिना
सी को धा। निरषत नयन न एच कचो धा॥१९६॥ त
ब परे च ऊं। षत मुष चेष्यो। अबकें रूप न षचषसु पे
ष्यो॥ उप मा क कूं पटंतर को उ सुरनर ना म लो कचि
ऊंपकुं॥१९७॥ वदन कला निधि रूप तेरूणी। कवि क्री
पमा कोई न वरणी। शशि कला घटि घटित न वाधें
सुषश्रो नादि न दिन अति चाढें॥१९८॥ नैण मोगम
ध्यदेई पाटी। मानु सेस कुनि कर वत काटी। सा परि
श्री श्रा फूलें मणि धारी। मग मद रस तिलक देसा
री॥१९९॥ सुत गस्पाहन कू हस्पां मतां सु हाई। कमलम
हा प्रिय सरस्वती वाणाई॥ कीध कांम धनु षकरि नू
गा॥ चित वंत वनिक न व सारी छूटी॥२००॥ नैन

३९

४८ कमलदलमधुकर बैठे। मगषंजन आर नतर
पेठे। कुनि वीसाल राजत टगको॥९॥ मानुमा
नमहाजल षोए॥६०॥ नासामहमेउ नमुंब
नाई। केहरी नष केसुक मुषपाई। मुगता चिं
कदिशे। आलि कति हां सोहे। षंडन परे जैसे
नागनि रोहे॥२॥ अधर सुवाले निरषत हारे। कु
निअंबपाके निरबारे। तामें दसन जमु सक
निमोहे। निशि अंधारी प्रीति सीसो हे॥३॥ फो
डी कुमुंदकली कुनि कोरी। सोहे नक्षत्र सपरे
दोरी॥ मगामद बुंद किधुं तिल वाढे। कैं आलीके
जके रिकें काढे॥४॥ गुवा निरषि कपोल या
नी। कुनि जरा ब्रक्ष षणतरु वानी। चोकास्यां

४७

मनोरी सब पावें। मानु कल्पें ज्ञातटि नव गृहआ
वे॥५॥ कुच सिधु किधुं संपट चाढे। कंज कोसकि
धुनारें गा वाढें। तापरि कुमुष कोकें चूंका दीना
मानुं सनेह को मैंके कीना॥७॥ लहेंगा लाल जसा
यअ तल सुको। तापरि चीर जरदो अंग रंग सेको
सुवेसु गंधव [illegible] तर सथरा। मानुं इंद्र धनु वनते
उतरी॥८॥ भुज मेना [illegible] किधुं बकु तनक गोआ। कें
कदली सुंदर नसु कासोआ। तापरें चंपक होरी
छवि पावे। मानुं बालचाशि दोकर नावे॥९॥ अं
गुली मुंगा कनार षनाई। कुनि पोहचे संबै पाई
जैसे कमल के के अलि लागे। सब पाए उमगे रस
पागे॥१०॥ नाभि कमल हाटक घटि लपै जैसी। कु

३९

४८

त्रिबलीराजत तिहांकेसो। पंडीकमचढण कें का
नी। केंविधि अांनिअंगुरीदीनी॥ ॥ नं गीकटिकि
धुंकेहरीछवहा। मानुं तटपरेंजनीसंबहा। तापरि
छिद्र घेंटिका बंधा। मानुंविधछज्जानिकेसंधा॥
कनककनखकदलीजंघसोहैं। पारीकोमकरंकर
तोहैं। कितीएककरुंबकरी छवि जैसी। कोराइ
छायणफलजैसी॥ ॥ राजहीचरणकमलछबि
सीवंसी। गजमरालकेरी गतिनिहसी। नुपररव
हासुरतिकेंसें। मानुंकमहूतहें हूरें॥४॥ दोहरो
घटदस बाचरणअंगसऊ। कुनिश्रंगारनवसा
त। उलटासोबाउनकेंभइ। देषोमधइह बात॥५
सोरठा॥ गाहनोअंवरससरूप। सबसुंदरसुरलों ४८

इहरमनीकोरूप। गहेंवाकोगहेनोभयो॥६
चौपई॥ अीयानृपनलनसजैसो चंद्रं। सो
गति उलटी भइलो चंद्रं गा। षोपमना
बसोलअं गारा। कुनिअं गारा षाचण
गारा॥ ॥ काछवनीयसिंगारगिं
सोकुनि सोनाहींया। विननृप न तनराज
हा। सांची सोचासोय॥ ॥ चौपई॥ भोजत
विननृपननलनेंसोहें। सोचारेंषसुरनरमो
हें। तीनलोकमेंभइ नहोइ। विधावनायक
ल सांचीजइ॥ ॥ घटऋतुबारेमास
सें। चात्रकमेंदपियास। स्वांतिबुंदपावक

३९

५०

२८ ऊरे। तोरें उकारूं आकास॥२०॥मा रुगो॥ बूझो
सयां नें लोय। ऊनो सुंकें तीकऊं। नागेमि लेंनरो
य। इक मोती मन मालती॥२१॥ जो दूधि मथन
लेय। इह गति मन की बूझीयें। व्हारी न सुणें
कोय। माषण तक मिलाइये॥२२॥ जनमालवा
रुक॥ जाजा युद्ध मुनि आपं। दंपती क
जह मेव च। चलारो द्विज यं यांति। प्रजाति मेघ
डंबरे॥२३॥ नपदा॥ अआयुकते चोट न पर
हो। मुनि के आपडो नकित पर हो। दंपति कल
हो नरा न हान्यारो। वरघत नहो आत घनवा
रे॥२४॥ निरस वचन तुम मुषच्चवहो। सुनत
मालती आवहो मरहो। सब हो सयानप जोहे ४९

तेरो। मधुई इह वचन सत्य सुनि मेरो॥२५॥ मधुवा
क्य॥ ऐसें वचन नांहि चित धरिहो। फिर कव
ऊं विचार न करिहो। जीयतें सत्य नत अब
मेरो कूरीयें जेंत कहा लुंसेरो॥२६॥ जैनमालवा
रुक॥ जैत माल मन मध्य विचारे। वानें लोक
बहो नहीं हारें। ऊगर तहास घेरो दिन जेंहो। पी
छे मंत्र काज कहा करिहें॥२७॥ जेत मंत्र थी तर
बसके। फुनि सकें तेऊं पल न विमुके। मातें के
जरके मद उतोरें। सो इह विरीयां कुन संभारें
॥२८॥ मधुत नौ चित्त ए निरषनि हारी। पंडके मंत्र
मोहनी कारी। वस्य कीनो अरु वान लगायो। फु
नि आगें पछ औरवनायो॥२९॥ जैतमालवाक्य॥

३९

५८

४६ मधुकरे सो मेरे मन मानी। बिन चारन रस नई ह
रानी। देयन में चित्त सो ईको जें। मेरो वचन न सत्य
सुनि जो जे ।३०॥ औषधी अनुरूप सनई है जहाँ। गंधु
पख्या हकरो तुम सुं हां। प्रेम नेह गृह चित्त दाजे। इ
ण बातें कछु बिलं बनकी जें ।३१॥ मधुवाक्य ॥ प्रे
म की गति को उन जानें। अबते न पवन की कका गा
लें। जरक बुधपजो जो तुम में धरी हूं। इन बातें नाहि वि
स तरी हूं ।३२॥ सुनति राय छिन एक मोहि मारें।
नि स्वारथ इह बुधप नीचारें विसरें तेरुं बु सान
करि हो सापक्ष दूंदरी की गति धरि हो ।३३॥ मा
लती वाक्य ॥ ऐसे वचन को नेंप नोखें। तो क्युं ह तो
सें मोहन राखें। प्रेम पुरातन जो न चित्त धरी है। म
रवें का जकहा तुम रहि है ।३४॥ जन मधरें सो सेत ५७

सुन मेरें। ताको सोच को उन करें। अब जी ये में तुम अ
वर विचारें। सुख दुख लिखो सो को उन टारें ।३५॥
मधुकं मंत्र बांधि वस्य कीनो। उत्तर पाछो कछु न
दीनो। निरषी मालती रूप लो चों नो। रति वसंत पा
ई पिक मांनो ।३६॥ नर अति चाप सयोंन पधारे।
सगरें सुगकं जी त्य उ बारें। करता नि हि का ह रगू
ब गारें। गुब धरें सो पुरुष ब हारें ।३७॥ जें मन वालें
जें त अचारें। मधुसुनके सो ईं चित्त धारें। कीनो
नर मकें तो जें जाकर। सुं वशी कीनो वा दी को मां
कर ।३८॥ ली नो लगन वेद विधसुं हां। परसें पा
नी पर रस पर सुं हां। कर कंचन कों चर ग्रह हा बां
ध्यो। रह्यो नेह बहो फिरि सां ध्यो ।३९॥ रचें कलस

तिहां अब जकेरा। मधु मालती करा व्या फेरा॥ मंगल
च्यारी जेत उचारे। सउचार मुनि कें चितधारें॥४०॥
दोहरा॥ वाचिव्याह मधुमालती॥ करनि रषें सुष हो
या॥ कुर्नादि गृह वाट कथा॥ चित्तदें सुना यो सो यः
॥४१॥ चोपई॥ राम सरोवर के ढिग वारा॥ बिलसें सु
ख मधु मालती नारा॥ माली एक हुदो तिहां रहे॥ स
घरी बात राय सु कहें॥४२॥ मालती वाक्य॥ मंत्री सु
त अरु राजकुमारी॥ दिवस च्यार पें तजत न बारी
करें किलोल क हु सेक न धरें॥ मो पे इह कछु कहें
न न परें॥४३॥ न पडख पाय महें लमें आए॥ कन
क मालत्रिय वेग बुलाए॥ सुनो ते वात कन्या कमय
का कहो॥ मंत्री सुत सु सुसने हजवा को॥४४॥ कन्या
उदर परो जिन कोई॥ सुष चाहत ताकें डर होई

ताकें रहो तो गह गुंथषो ए॥ बिगरे तो दो उ कुल
बोए॥४५॥ राजा कहें पायक हंकारो॥ मधु माल
ती दोयन कुं मारो॥ एक कहें त अंक अनुसरें
मालती दोनुं सुकहायो॥ तो तु कनक माल का ह
करे॥४६॥ राणी वाक्य॥ चेरी इक जहा वेर बुला
ई॥ पढें वेगा राम सरोवर आई॥ मधु मालती दोनुं
सुं कहायो॥ तजायो देस उहा कोर नर हायो॥४७॥
नप तिहत प गए तुम मारण॥ जुं सुष देन आई धा
य कारण॥ सुनत मालती अति बिलषानी॥ मधु
कें कंठ दोर लपटानी॥४८॥ मालती वाक्य॥ प्रीत
म वचन सुनि सविलाजें॥ इह गहर रहन अरनपी
जें॥ चढि तुरंगम अब बिल बन कीजें॥ जइ इं जह
दिन दस जा वीजें॥४९॥ श्लोक॥ यत्र जलं तत्र तीर्थं

३९

५३

५९

यत्राग्नि तत्रदेवता॥ यत्रनायागहैं यत्र। संदेसो यत्र
जीवीत॥५८॥ मालती नाको॥ तोटक॥ बहोरी मालती
बूझें औसी॥ मलयंदसुतसुनई सो कैसी॥ सो समयो
नयो बात कहो जैसी॥ मधुसूनायक के उपजी तैसी॥
५९॥ मधुकर कौ॥ अथ रूपरेखा प्रस्ताव॥ चंपावती
नृपतिमलयंद॥ ताको कुंअर नाम तसु चंद॥ वरस
बीस बावीस में साई॥ तास पटंतर और न कोई॥६०॥
जास मंत्री गहकन्या सुंदर॥ वरस अगारो माहिसु
रंदर॥ रूपरेख नाम तसु सोहै॥ जा देखे मुनिवर मन
मोहै॥६१॥ पुरसमीप जिहां सुंदर बारी॥ पहुप सुं
गंध परम सुषकारी॥ कुंवरी बयल करण तिहां॥ आ
वे जाय जूहीकें कुंज बनावें॥६२॥ तहां कहूं चंदकुं
अरसुनि पाए कौमक केलसुजात च आए दो तुह

५२

षी तब डी अति सारी॥ रूपरेख रमनी चित धारी॥
६३॥ मालनी एक कफा करी रहें॥ तासुं चंदकुं वरयु
कहें॥ कुंज काढेर करी इहां नीकी॥ फूली जतांजा
यजूही की॥६४॥ नीकी गेर निरषी सुष पेऊं॥ तो
कुं उचित द्रव्य बकदेऊं॥ एह बचन कहो मंदिर
आयो॥ कैसो सो मालनी उत्तर त बनायो॥६५॥ रू
परेष के घर नसुहाई॥ घराडु परं वा गामें आई॥
निरषी कुंज नैन सुष पाई॥ रूपरेख जीय चूमतु
लाई॥६६॥ जानो मालनी मोहि बुलाई॥ सषा न गो
डी आपति हां आई॥ मालनी चंदकुंअर कुंजो नें
रूपरेख भी कुं नाहि पिछाने॥६७॥ तो लुचंदकुंअ
रतिहां आयो॥ युगल परस्पर दरस न पायो॥ देषो

३१
५४
१२

सुविधकरताकीकरणी। निरषत गिरें विकलहो
य धरणी ।।६१।। मालतीमनसोचअति करो। संके
तसोचनयेंदोउ मरो। पिपरकोटानें घरकेंदारा
इहेंइसंगजयोकहुकोरी।।६२।। वपुसंजारातब
दो यउठबैठे। मानुमेनवानअरूपेवें। ऊ मरा
चेताचमकितमुसकानी। चंदकेंअरसबजानउवा
जानी।।६३।। गुहा बानअंक उर परसी। मानुंबूटगा
ईकमफरसी। तबमनअंगणजाए एकहोई। कहिहि
कवणजोतसुंजाई।।६४।। बंदासहेंउरहोजएकमि
कोने। तीजोवातकोइनहीजाणे। मध्यरयनास
मयोतिहांहोई। बंधेंवचनमिलेंतिहांदोई।।६५।। ए
कदिवसवाटिकेंमझारो। रूपरेषअरूचंदकमारो ५३

ऊसुमसेऊरचिवेंठेदोई। फुनिइछाअरूका
मकीहोई।।६६।। रचेअंगसुगंधसुवासना। रतिसु
खसुरतिमिलकेंआसन। उहांविरायांइकनाह
रआयो। रूपरेषडरीसबदसुनायो।।६७।। तजोमो
हिउमजउनकेंजगो। ओनाहरनिरषोमुषआगो।
विनदेईसुनोहिमतकीसाषा। चंदकेंअरजेंसें
हडराषा।।६८।। त्रियआसनग्रहराषा जेंसें। कर
कबानकेंअरग्रहा तैसें। बबकीयाघतबमुंह
पसास्यो। देहकसीसबेसीसमेंमास्यो।।६९।। छूटो
बानजाइतरूअटक्यो। मानुंप्रानसंगलेसटक्यो।
देईऊबानहाथनेंडारा। कीनोसेऊरमणसुषका
रो।।७०।। मनमेंकछुनचिंताकानी। करतारहिमत

३९

५५

से पूरनदीनी। जेसेकोउष्णधारजधरीहे। इक
वारतासुइंद्र मरीहे।११ श्लोक। उद्यमंसाहसं
५७ धैर्यं बलं बुद्धिपराक्रमौ षडेतेयस्यविद्यंते तस्य
देवोपिसंकते॥१२॥ इति श्री प्रस्तावसंपू
र्ण॥ मालतीनाम ॥ नाप॥ कबहुंकहिमतको
उकरिहें। तोकुनिसातपाँचसुंजरिहें। नपसु
रूरुकहलुकरिहें। मधुमेरा ओ नतीसुनलइहे
॥ ... तेहगिलोलषेलनकुंधारी। परहेरूरुइ
हां अबन्तारी। विनआयुधतुंमकुंकरजरिहें।
हाहीदेवकोनगतिकरीहे॥१४॥ कृपापिनीइ
तनोनहाकरूी। मधुकुकारणपहेलेसरूो
कीहरआयकेंसाहिउबारें। कुनिरविको ५८

गेंमोदपसारें।१०॥ पहिलोजनमजबपायमायो
रूजीरूजेंनटकोअबपायो। कुनितोमईहविग्र
हवाढ्यो॥ कर ताकोनंकरममेंकाढ्यो। ... माल
तीबिलबिलायचुकेहें। अबगवरीशंकरतनेवे
हें। स्वामीअबईनकोसुद्धिलीजिं। पूरणकृपाअ
नुग्रहकीजें।११। ... इहांपरिहें
अंतरिषरहाकेंचित्त धरीहें। याकें जीवकोरक्षा
कीजें। सेवग आपनो जानिचित्त दीजें।१२॥ हर
गोरीकोतिकतुंरहें। मालती मधुकरनेंकाकुं
कहें। चिकुंओरतेंचोरजबपरिहें। विनंआयु
धतुमकिमकरिजरिहें।१३॥ ... माल
तीतबंजबजीयउषपावें। कोसांमंतमेरेसषआ

वे॥ वेरवेर कहा करूं वखाई॥ तें गिलोलकी सुभ
न पाई॥८०॥ एक गिलोल चोट जब परे। छूटत औ
र षषर बज इ लगे। बहेव डे योधन कें नूम ने गो॥
अरजुन कुं गुरु द्रोण पढाए। सो विद्या में सब सीष
पाए। अैतें ऊंक बुजीय नरुरातुं। कहें तो तो हि प्रत्व
क्ष देषावें ॥८१॥ एक गिलोलन सुं बक मारे। सघरे
पत्र बिट सुं डारे। हस्यो निसान रस्यो नहीं एको। मा
नुत कसकोकर लिषो ॥ मालती निरषी नेंसच
पायो। तो लु पायक सब चल आयो॥ मार मार क
ही वचन पुकारें। एक गिलोलन सुं मधु मारे॥८४॥
कितीएक मूए सो नीर नमं गे। कितीएक घायल
सो कुनि नगे। सो नृप आगें जाय पुकारे। मधुक
वे पायक सब मारे॥८५॥ नृपकोपें जाबरोसत्र ५५

नाए। जनक मधु को उ मुष बोलाए। लरका एक
मुकुं कहा करें। पर चक्र की नि हचे को ई लरे॥८
न्री सहस इक साज बनाए। चढा सामंत त्यें
गहा आए। जेतमाल ती सुं मधु घेरयो। बनीया
बनीया सब दसुं टेस्यो॥८७॥ कें करवी सेर
न वाट में कीनें। हाथें गिलोल तरे ले लीनें॥
स घरो कटक तोलकें काढुं। नहीं तरवनि
कवें सकुं वाढुं॥८८॥ उग्गो पत्वार बाह बल
तोलें। जेतमाल तुही अैसें बोलें। गंढे कें
वर श्रवण सुनि वातें। आतो नहा कुंक की घातें
॥८९॥ हुं मतो जाय अेकलो लरें। जीय मेंत्रा
समालती धरें। अब जा हाकसुं नत हां मेरें। पा

३९

५७

ह्रेयुद्धजीतौकहाकरें ||४०|| जोतुमअपनोकु
रजसाधो। तौ क्ररबकलकटंबआराधो। प्रथ
ममालतीवनविसतारो। पीछेंत्र मरयाय आ
पहकारो ||४१|| ऐसे बनें नहि कारज सरो हे
रंगी मुहलतोरें दलघरी हे। तेरोआप जसकों
नकरा हें। बिन मारें घरे आब मरी हें ||४२|| जे
तमालतें नलीवताइ। पे इहफोज मुंडपरेआ
इ। इह वेरिआंति मेतानहाहोइ। प्यों नगिरा
त पुरुषारित षोइ ||४३|| उषरआंनमध्यंज
बपरें। तो मुसर घाव कहालु भरें। इक वेर दू
नकें समझावो। फुनि पाछें बकबुध्यवंतावें।
बेग बुलाय फुफ कहा करि हें। षित्रीतौ ५६
तो तुकट कआय गयो नेरो। फुनि बनिया बनियाक
हें घेरो: कहो रेपाय कए कोनमारें सो कहांगए षेतत जिमारें ||४४||

किन्त मुषपारि हें तौउ परिकोउआयुधधरि
हे। एकपंथेरनमारें मरिहें ||४५|| सुनत बच
नेमधुकेरी सलोगे। गए चलाय पिंड दस आगें
तब गिलोल साथ ग्रहें लीनी। अरजुन मंत्रसी
घो सोई दीनी ||४६|| जेंवा हनमें कंकर मारें। षि
त्री षंड विहंड करि डारें। एक एक कंकर केल
गें सबे ब्योधन के न मन लागे ||४७|| सुंवरषान्हा
डुफर फारें। पंजर हाडि चूरि करि झारें। कि
ते इक मूयें औतन सूयें। किति एक चंचकरी प्र
रलूटें ||४८|| कि तेक मुषकुं बचन न बोलें। कि
तेक घावि पूरें सो डोलें। किति एक गरब रसाय
नय कतें। कितेइक मानुंजा गनि झिसते ||४९||

कितएकमुषपांनीनहामोगों। कितेइकगयेंराय
पेंजोतो। कितएकमधुउपस्थिलआए। यांकरेंनि
रषबहोतसुषपाए॥ मधुकेंनीरवहोतजबप
रें। तिहांत्रिषलरूइकेफिरें। त्रिवरग्याऐसेंजिहां
करें। सुरनरऊकानंतफरे। [illegible]
लोरेंसुचटहकर। कुनिपायकदजसहितएनृप
सुकरेंपुकार। याइलजुराहिल्लनए॥ [illegible] चं
द्रसेनघाइलकंबके। कितेइककटकआया
रिणमेंकें। सोऊवातष्मबनेंसुनपाऊं। तापरेंस
तीऊमषपराऊं॥ घाइलकेंकटककोउनां
हिगहागिलोलमधुकरतांहि। कंकरमारिविङ्स
नकानें। रजेंआमुधनांहिगहिलीनें॥ [illegible] चंद्र ५७

सेननृपवातनमोनें। बनीयाकाहासुधकरिजा
नें। कटकगिलोजनसुसितमरें। जरकाएककहा
लुहरे॥ परचक्रीनिहचेंकोईआयो। सुनिकेंम
त्रीवेगबुलायो। पंचहजारबैहोरसऊकानें। वधू
कोधनृपआइसदीनें॥ [illegible] मनमाजवाइक॥ म
धुअबकहायाकरहोमेरो। बेरातोअपनोंऊलम
सुमारो। जोनजचेलोतोगहरबंफो। दोयचल
मोऊएककृपलमेंडो [illegible] नृपकोंवे
रोयकितआऊं। तेमोहिकहिंसोबुद्धिउपावें
स्ठरसरजोआगिरणचकें। समातकतनाइ
कऊलजडें॥ मोऊंतोसबबनीयाकरिजा
नें। मालतीनृपबनीककीवोनें। हमतोप्रेमपर 59

३९

५९

घनलागें। षीरनीरमिलें होयेंनन्यारे ॥१०॥ रिण
संग्रम चाजकित आउं। इण वातनकें संप्रीत पा
जं। देषा मालती वनं विसतास्यो। कुनि मधुकर
को सुथहकास्यो ॥११॥ रामसरा वरकें हिग बारा
ओडें मोटें वरूमझारा। तोलुं जे तज पवन स्था
राष्यो। सीतलमंद सुगंध हासाध्यो ॥१२॥ अतिहें
सुवासदिसोदिस धाई। चमरसुहालसैन्यचल
आई। नारअठार हजाति। चनिरासो सबुच
ईमालती केरी ॥१३॥ कस्तूरमुषमाषी विसकेरा
सुनसुवासदिसोदिस हेरा। मंत्री सुत समरण
कुनि करें। तुंतुं आली समुहविसतरें ॥१४॥ वें
सें समयें कटक चढि आयो। मधु कुंवर सुनिकें ५८

उरधायो। मालती रोर कंठलपटी नो। वोसेंजें
तमालकाहयीं नी ॥१५॥ धरोकुंवर सयन
चितराजे। काज अकाज हामुं कराजें। नकु
तें तुरें तुमसो जोई। कारनकारज कहलरें सो
ई ॥१६॥ कारन पें सब कडक पवाउं। तो कुं इह
पगरीच दिषाउं। चलकी फसत वचें जो तुरह
तोको ईआंन इहां सुष करहं ॥१७॥ सुभ सयां
नें चातुर चाषी। सुन मधु जेतमालका साषी
जो तुजाकें से वकलरें। तोलुं क्रूजन साहि बक
रे ॥१८॥ आवतहा सब षकूंकेरें। चवरसु
हालमाषी सब हेरे। तुं टारें तुं गारपगारा
तुंतुं अलाए तेसेन्यपरहारी ॥१९॥ विरचैन

मरकटकमेंञाए। जेसेलीउषेवकेषाए। कोटि
काटिएमतनलगे। मानुंञेगारहणविधिहोंं
॥२०॥ हंसवरणकटक उजायारे। पलमेंनये
कागसोंकारे। चमरमुहालमोंषनतनचोटे।
मांतुंफटककफांबरीछोटे। ॥२१॥ हसतचमर
मानुंफूरचवीं। कूदऊककरीपगफारतपांवं
जोधाऊंऊनकीगतिहारे। जेघरमुंडमांतुंम
तवारे। ॥२२॥ हरीतारघरकरहांञपोंहांघर
मांघरकरकेंसपांई। कऊंकवांनककऊंतरग
हूटे। नेजाढालपरसपरफूटे। ॥२३॥ कऊंषेज
रगिरीकऊंकटारी। कऊंजकरकऊंजेमधूर
न्यारी। कऊंतरवारकऊंकेलषंडी। कऊंगुर

जपताकऊंझेंकी। ॥२४॥ कऊंबेहूषकबांण
कऊंछूटे। करिकरिसबरीसेन्यफाछूटे। फर
सीफरीबगहेंराषेरी। ञायुधरहेंनकोउनें
री। ॥२५॥ मधुजुरेंऊकरणकेंञाए। सुंसमा
रघनघटाघटाए। विधेंऐदोउकोउनागें
उनवांहरकानी। नपञागें। ॥२६॥ गरिहें
कटककचमरकेंषाए। विनञ्जेसबधर
णीनाए। नरउरंमततुत्वचानवंची। जी
वतमएरहेदमषेंची। ॥२७॥ सुणतराय
मुषञंगुरानाई। इहतोञाजउमेंसुनाई
वेंचसहसकेसेचलाबाए। जगवातकहें

३१

९९ तेपाए।२८॥ फुनि अरसुंकरतोजुं आए। हसे
नमरसो आन दिषाए। तोउ नप चित्तवातन
आवे। कब साची ऊ भन्रु जनावे।२९॥ प
रचकी निहचैं कोई आयो। नमररूपकसुसेह
रचलायो। कुंअन कुंहा पसुं जाउं। घरबैठे
आयोकित पाउं।३०॥ धीरे वेगर मा मा घाई
अरु सारनीकी करो सरण। इ। फ्रैनिसाणपा
तुं घन राई। सिंधुरागवजें करनाई।३१॥ गज
तुरंगसबचमर मछाए। सऊसना हतासपर
आए। नमरडसन कुंगहरनो हो। सबदलय
तनकीयें नपतां हो। ३२ करी दससहसचं
चलताते। कुंजर पंचसहस मदमाते। वेरकि
लावालोंबबिपावें। मानुं गयंदद किंतमध्य ६०

४

धावै।३३॥राजावाड़का॥ तातें चढ तहें चढ
आए। देषपंचसहसञ्जलीधाए। सोवनगीरें
तिहांए सरो। नपजोणे एचायलपूरें।३४॥ ला
गी सो गीपरस परनेजा। हायां पंजरकाढी वो
हिनेजा। तातें परचकी सो जानें। नमरवातस
बकही मानें।३५॥ हतच्यार उहां वेर कुलाए
सीषदेई विकुं और पगाए। उस्लोक टकदे षि
करि आयो। अनंत जनकंऊं नेदन पायो।
३६॥ हतच्यार उहां वेर बुलाए। सीषदेई विकुं
और पगाए। उसोक टकदेषिकरि आयो।
कानेतकुं आरदेषे। ढिगहो जेतमालती पेषे
।३७॥ दवाकी॥दोहरा॥ जहीकुंउ आमिषदे
षहें। जद्यपि जानुं कोउ षाय। कंवनें बोपें

३९
६२

कोउफिरें। हाडहीहारबनाय॥३८॥ चोपई॥
करताकोनऋयांनपकीनो। जतासेहेजब
नितांको दानो। किकडुमहोयताहि चढित
हिवोटें। एरंडऋबपटेतरकाडें॥३९॥ जो
रें होयमधुविरहामातें। कोहोडरमतपसोधु
कहिकोतें। जोगजमातोतोहिसुडसंचारें
तेरेंलुनहागूहितऋगारें॥४०॥ कोवासाधु
चए जोपुरवासा। सोहांमासचाहेंनरवासा
चीटीपांषलगीसबपाई। तोकुंइहऊबुध्य
कितआई॥४१॥ नोमसाहऋरुकीनाचोरा
विनबसंतकितषेलोहोरा। बंधुकोरिसोविक
रकहाई। कुनितोहिएहकबुद्धिकितआई
४२॥ बारीमाऊकुंचरलें बेगो। कोठेंआए ६९

तोहिपेगेकहायेंकोंनचांतिबुध्यतोहो। जाकेंपे
२ करेजानोंहो॥४३॥ नपदलमारगायोजीयगा
रो। बेठोआनिएकलोन्यारो। ऐसेंसमेंआनिकौ
उघरो। उपरिकरतकोनकोउतेरो॥४४॥ तेरें
कुमयकटककोउएहें। हमेंहेरोकरोरायपठिं
हें। ठलबलहोइंतोऋबकुऊमंडो। नहीतरम
धुइहगहरछंडो॥४५॥ इहसुनिकेंबरीमालती
बाजें। दासीइनकेंमुंहमेंदाजें। इतहिगेहोयबो
लेंगाठो। गोतेंमारिइहांथ्याकाठो॥४६॥ मारए
जबभाईप्यारा। मधुकेंवरजबडकोउचारी।
इहमारा। बडपुरकितमीजों। इहवातेंकहुसरे
नसीजें॥४७॥ ऋलपबुध्यनरहोइंआयांनो। ता ६३

३९

९३

५२ सुरोसनकरतसयनो। ऊकरतुंकेंगयंदकितथा
जो। एसें वचननांहिचित्तदीजें।।४८।। केहरीजीह
करिकोईमारें। उनहाथेंमेंडकनहीमारें। रूठें
कूठेंजगहानजानें। तोकरतवेंकितमांनें
।।४९।।श्लोक।।यस्मिन्रुष्टेभयंनास्ति तुष्टेनेवध
नागम। उग्रहानिग्रहोनास्ति सरुष्टेनकिंकरिष्यति
।।५०।।दोहरा।।जिहरूठेंकछुडरनहीं।।तूठेंसरेंन
काज। ताकोलोकितकीजीयें कोकेंकलकीला
ज।।५१।।चौपई।।दीनोहूतविदाकरितवही। क
रोहोरायकरोसोअबही। नवनवमनकेंधूलव
जाए। सोकहांफरेंहंसूपवजाए।।५२।।इतिश्रीहू
तसंवादसंपूर्णं।। चौपई।।हूतजायकेंहंद ६२
हसुनलीनो। चकोरोकोमनरूपअदसदीनो। पहे

लीएदोईपटकीपछारो। पाछेंकरककसोथक
रिमारो।।५३।।हलकीनेंहाथ्यहाथननेंहलक्का
लीनेंकाढिसारकेंजलका। घेरसोरामसरोवर
बारी बोलेंजहांतहांथेंगारी।।५४।।बनीयाहू
सोकहाहुलरिहें। धरतीफोरकहांजुसमरी
हें। विहंगमचरनथरमेलें जेहों तोकोषोज
नकोउपचेहे।।५५।।ऐसेंवचनकेंहंसलेटरी
बारी अतिविकदिसें घेरी। सघनकेंजेदेषें
जिहें अधिकें। गजतुरंगजहांपेसीनसके
।।५६।। तबनपकेहेंकाटोवनसारो। गजलगा
यसघरेउमकारो। तवकुंजरवनतोरनलगें
नमरकुहलबहें। तफिरजोगें।।५७।।दोरिल
परकलुअनंतनपारो। रोकेंजायसेंबेंदलसो

६४ रा।लेगो उसणकोपकरितांहो।एकरत्नु तिक
रेंकोउनोंहो।५८॥चषुचरनलेईचमरेडकें
सकेंसन्नाहता।सपेरें बेकें।नषशिषलुंकेहें ए
कनठघारो।भली अपनेसघरो अमहारो।
५९॥ तोलुसुधानई मधुकरनो।उगो।सबाहि
बेगीउहि वरनो।करि गिलोलअरुकं करपे
टें।पहिलेंजानिगजनसुंघेटें।६०॥ इनदे
षोकेंजरवनमारत।बारोजोरागहेंगहेंडार
ता।दसुदिशवागहोयतदऊबाटनमानुंकि
सीनलगेंषमकारन।६१॥ निरषाकेंअरवो
हबलतोलें।मुरवतेंवचननोहिकहुबोलें।गोल
गिलोलअरुकेंकरतोरें।६२॥ छिनछिनछिनई वि
डकरिमारें।ऊहेंकाठमानुंपरेंककारें।ज्ञारो

पंषजेंसेंबुगलनको।काठोबांहजसेंहेंगदनीको।६३॥
दसनकिरचफलरियणजेंजो।छुटीसुंमनसुमवि
रजें जबरसें गगो।जेंवरजेंसें।मद मातेमतवीरें
तेसें।६४॥गजगिगायगरजेंघनमानुं सुणतेरो
लचिकदिसेंचयानुं।नपजांणेंपरचक्रआयो।
ऊऊनिसाणगहेंगिरणायो।६५॥ मारमारकहो
बोलणलगो।इहसुनिकेंवरीमालतीजागो।दोहरा
सुणतेरोलरिणऊऊको।उठीउनाद्दावोम।इकइ
कुधारजनाहिंधरें।छिगऊंनदेषेंसोम।सोपई।६६
छिगदेषेंमधुकेंनरनांहिं।मालतीमलिनवदनऊ
ईतांहिं।जेंतमालगहिउरसुंलीनो।सषासमझाय
केंधीरजदीनो।६७॥जेंतोजोयमेंअवरविचारें।
मधुकेंअरकेंकोईनमारें।कांमअंशशूरणअ

वतारी। इनकी अकथकथा हैं न्यारी।।६८।। तानलो
कस घेरो इनि जीतो। असें ष्याल होए अबवा ते।
सुरनर नाग असुरनर जोई। वासा कलम रसो।
न कोई।।६९।। जोगी होय निरंजन ध्यायो। इंनतेन
हा कोत पटा स्यो। श्री सराप इनके गुन पाई। इं
द्र आग लग सहसल गाई।।७०।। गौतम नारी सिला
इनकी नी। जालंधर छल वृंदा लीनी। करी उपाय
कीचक मरवायो। इनस घेर सु गषेलषे लायो।।७१।।
इनको गुन नीलनी नई गौरी। चुको ध्यान हरन्याए
स्यारी। इन हा कांम बाण उर मारे। पार बतीने ज
र तउ बारे।।७२।। यो वन रूप जहां जु जोई। सो पुति
बिब कांम को होई। इं नकै इपद लनस रानां हिं। ६४
तेरो पिता न लेषा मांही।।७३।। कांवा।। मन्ने नकैनद

लनेन विसंतिसरू। के चितु चंफ मगराजव
धेपि दृष्यो। अनेक वीर सुन्दरा कुणखेतधारा।
के दर्प दर्प दलने विरला मनुषा।।१३।। चौपई।।
मोते गये दद्दलनकुं सुरें। फुनि हन तके हराकुपू
रें असें सुन्दर कुण पराक्रम जोरें। पयके दर्पद
मनकुं धोरें।।१४।। पडक देह किसन जी मांचे। सर
नरकेरें नतीयकें सांचे। याउ वंस चौंस च्योव ता
री। कुंजीय सो चकरें कितबारी।।१५।। याउ कु
लकी जेतसु नाई। किती एक धार जमन में आई।
स ज्यो पूर बलो न व आपंनो। मानु जागा देषें सु
पनो।।१६।। प्रगट्यो गांन अयोण पहुंचो। जेंसें र
वि उगै तमउ ये।। सुमर तनों मए कर्केस बको।

कटतपापअघजन्मांतरको।७८।ध्यायोपानअ
योणपहुतो।जैसेंरविउगेंतमउयो।सुमरतनाम
एकेंसवको। घाट:
जैतमालदीनोउपदेसो।माजतीजपतनामश्याकेसो
अगतिवछलबिरदनिरवहायो।इनअवसरअरको
नसुकहायो।७९।सौप्रतिसुनेनसंतपिरानोरुव
वैदकायजुगजोनें।सेतनसुतकीवाचाराषी।युग
ध्यायेंजेसेनिधुसाषी।८०।जनअपराधकोटिइक
करें।उमदयालहोयचितनविधरें।गुनअवगु
णज्योंजीयविचारी।तोपतिकाउपकुउमकित
तारो।८१।नगुरिषीआयलातउरमारी।नगत
जोनिजहांचरणसंचारी।इतेंपरनाहउपदाइ
उंपयजेसेंपूरणसुषदाइ।८२।तेदसरूपदेवहि ६५

तकानें।आनिवेदबुलनकंदानें धरणीसेस
कंधपरराषी।मानुलंककपहारेंपंषी।८३।दो
पदावसनडुसनहुराए।तेकृपालसोकेंकर
तुराए।अत्पउवाहआनंदचढाए।तेजुगमें
पोनपचढाए।८४।बुजरिछनकारणगिर
धारो।नीरबोणतेंहाथपसारे।मघवामेंघ
वारअतिन्वारो।पेंजनपेंकछुपुरषोहारे।८५।
कवलनेनकरुणामेंकेसो।अस्तुतिकरण
कोनाहानरेसो।संकटमोचनजेंबिरुदउमारे
इहजानिकेंनेकनिहारो।८६।प्रभुस्वरूपआ
इउमदोइ।पुन्यअरुअगतिसंपूरणसोइ।से
वकसुतजीयजानिविषारो।बहोतलाजनिव

लोदोईनातें ॥८७॥ वैरवैरकेंसेंकरीकहोयें औं
तरजा मी मनकालहायें। बाहिरसुनतनविलं
बनकरिहैं मेघदादिकमननमें धरी है ॥८८॥
मालती की आस्तुतिसुनिलीनी। पुरुषकाज हरि
आप्पादीनी। पंषीदोयआरंभपगए। वेग ह
मधुमालती बुराए ॥८९॥ गुरुवेगआरंभवोल
ए। आप्पालें सुनिकें उठि धाए। अतिविरूप
नयानकदीसें। परबतशिलाचरणनसुपासें
॥९०॥ वको उदरखो हंसमप गए। पंषपुवा हस
यलसी आए। जाकेपाववकेंरक्रसेंथर। आंगु
रीमानुंगुहेंडमको जर ॥९१॥ जैसेंमुसालनेन
जीरा। औतरमानुचुंचकें तफीकातर। मानु
गुहेंअवलनाशिकाकेंयार। चोपमायकें आ ६६

वरकोहंपर ॥९२॥ औसेपषीदोयपगए। पवन
वेगपलकमेंआए। देषीकटकग्रासनकेंथ
ए। जैसेंनरथबांणतिरिगए ॥९३॥ चुगे
आलीचलीसेंजेहें। आधिकसेंदलग्रासिग
हें हे। आधकउपरकें हराधाए। रोंकर त्रि
वत्रिशूलपग ए ॥९४॥ गजजुरंगसीहदेष
नसकें। चारंडकेंहरीदेषदलकंपें। जागेंजी
तकरतकुनिलिहं गिरागिरीपरें महाजुंपि
कें ॥९५॥ एकदिशामधुकेंकरमारें। औदि
शाचारंडसंहारें। ताजीदशासिहगलग
जो। केंजरचुंउठारजुंपिमें ॥९६॥ आपणो
कटककेंरोलजजामी। जितचागेतितहीफ

रआगें। फिरि फिरि कुनि होतकुणराआगें। रा
जानिरषषिततज्यजागें॥९१॥ चंद्रसेननपगा
हरखेमा। कोसचारातिहांओऊलमें मी। न
लेंगतिओककछुनसकें। विप्रातवातकोंन
कुंबूझें।९८॥ हिगदेषेंदलपरि गयोथोरो। ए
कसहपायकआरूघोरो। बाकीआचसरलस
करसंघारो। देवनआगेंकाहविचारो।९९॥
राजावाक्य। प्रसंगमंत्री नौ॥ राजासोचकरैं
अन्यमंत्रीलियेबुलायसयानें मंत्री। रेजइ
आकछुमंत्रप्रकासो। मोकेंजयोडुरगतिको
वासो।१००। हमतोआवरवातकेंदोरें। इहे
जइइहकारनओरें। कंमसुनोनविकूज्यो

आगें। तोजईयातानेंलंकलागें।१०१॥ जोन
पषरोसयांनोहोई। तोमंत्रीकोगतिलिषेन
कोई। षटरसकोज्योंकरेंरसोई। सामुद्रिकवि
नस्वादनहोई।१०२॥ मंत्रीविनाराजनिति
नोहा। जेसेवकबकूलकोछांहा। विजासापमे
नकोईमोनें। नपत्रयोनसोइतनोनजोनें
उपश्लोक॥ नदीतेरेसुमेवदृपा॥ याचनारीनि
रांकुशा। मंत्रीहनोनवेदराजा। तस्पराज्यंवि
नश्यति।४। नार्थः॥ नदीतेरेद्रुममनिहचेंव
हें। परघरनारिजमेंपतिरहें। मंत्रीविनन
पराज्यनविरहें। चाणाइकसाषीइमकहें।५।
मंत्रीवाक्य॥ पहिलेंसोपाइकमंधुमारे।

हूजे अवर सन्मुख होरे। तौ जे पंच महस अलि
षाए। ता दिन हम कुं न बोलाए।६॥ कुमिए तेल
रूपरिचले। बैठे व जाय आ पच रूप्रले। कट
करुआय आपु उर लगौ। पीठे हम कुं कुन लगै
।७॥ दृष्टा॥ जो वतलौ नठेउ नहो। सब दिन करैस
योन सर अब सरस मुं कुं नहा सो न पघरो अयो
ना।८। चौपई॥ हा तिला चकचुस भऊ न पैरो। ठि
गोते चुगलन प्यारो टरै। कुत्या वचन राय चित
धरहो। मंत्री जेसो कवण गति करहो।९॥ राजा वा
क्य।॥ रानिपाते छुये विया। कहा राजे बहु
मंत्रिण। रण जे गे छुये भूरा। एछ्यौ ये तिलक
यी।१०। चौपई॥ बिया रानिपातन ले मंत्री। कह

ता ज्यु राषे सोई मंत्री। हासी क कलके संकरो
पहो वा तीन तिलक पछ रो।११। मंत्री वाक्य। सु
नेहो राय मंत्री अब गनो। इनमें या तन कोई अ
नें। जब ही मंत्र साप का आवें। तब तो करवा
बुसं ता वे।१२। ते ते मंत्री तारण साम्। ताकुं उ
चित का यो सुं राख। हम संय ति सके आ प्याका
री। अति डुयो ण तारण अभिकारी।१३। इह
विगु ह लस्क मर्थं वा हो। ताही सथी अं मतारण
कार्षो। कतक मत होय विसतेरे। ताकोपि ताकुय
ल गति करें।१४। ज्यौर जेले ते बुरा होई। तौ कुवि
मा फरफरे सब कोई चातुर नप हो यक कुं ज्या
यका। तो रोकर माय कि लानि या की।१५। ज्यो मं

३१

त्रीकुं सरबससदी जें। ताकुं उचितकवचकें नका।
५४ जें। उचितकीयां नपकी घरही जें। जेंसें अम
वाइंण घतदा जे।।१६।। देषो स्वातिको नविध
दरसें। देषो अजवाइण परफरसें। मंत्री उचि
तकीयां नृपसरसें। तो मिलनसों हव्वयो सु
सरसें।।१७।। बहुत वचन कहलुं कहांइं। जो
जांणें तो मनहीं में गाहांइं। जब बहुजो होइं ज्ये
साची। मंत्री बिनाम सुरत्य काची।।१८।। सब मं
त्री मिलान नृप समुझायो। तब हीतारण उरत
बोलायो। आवत देष अतउर त्यायो। पकरा
वो हथियार बेंसायो।।१९।। राजोवाच।। सुण
तारण हर विग्रह बादो। मेंतो सुंकछु वचन

नकाठो। कुंजन अबजीयमें डुष पावें। राजा मंत्री
कुं समझावें।।२०।। तोलुं ऐक पाहारू ऐसो। चार
मसों हथ्था निदल घेसो। न्योसो रक बुसमझन
परें। गज तुरंग सब बूटें फिरें।।२१।। ता रणहर
गाको वरदाई। दल हलबलत व जगो सिरनाई
हटको सी हहाकदें गा थी। रिषेमरजाद न्नारें रुक्ष
काढा।।२२।। रेंन्नारेंड वचन न्विस ध रिहो। हरिको
अंनिअंगों विग्रह करिहो। दीनी गुरुड पंषीको फ
हाई। अंगामा नरहें थिक ताई।।२३।। दोहा।। आ
ज्ञा सुन तें हरिकी मानी। वचन नारेंड के हरा बे
त बेउनहा। गहो प्रबल प्रचंड।।२४।। चोपई।। गहो
सो हम हा गला डों। सबद सुण तसघलो दलन्नडों
बिलविजाय जेंसें मधमा॥ को ज्यु जटें नसत्या। 71

राषी॥२५॥ वारी माफिज्या निकें धेस्यो। के निजा
वब्रा जकुलगफेस्यो। इहविध साहेराक्य दलठा
ढो। पमो सैदे हरायकुंगादो॥२६॥ तारण तारण
कहै न पटेरे। इहि अवसर आज को नहि मेरे
डेरा षेके करता राषें। राजा चंद्रसेन सुं आषें॥२७
॥सोरठा॥ क्रणतवचन नईलाज नबता
रणकेसी करो मो जी तब फल आज। स्वामी धर
म चित मैं धरूं॥२८॥ परें स्वामी सुं कोम। सेवक
अंतर देइ वसें। ता कुं नेंकन ठाम। चोरा सालं
दमे॥३०॥ श्लोक॥ मेकतसकलादृष्ट्या। मेकत
सुरनिरुज्पल। मेकतसर्वधर्माणि। स्वामी धर्म
च मेकत॥३१॥ दूहा॥ विधना अपने हाथ सुं
ताहें सबै करम। सब सुकृत अेक पलक मैं एक

ज सो मो धरम॥३१॥ चोपई॥ तारण स्वामी धरम न हा
रे। मैं अउ वाहस्यों मसुष फेरें। मारी हाथ सुं गीके
करकी। आपा द्वी गोरी शंकर की॥३२॥ अथ गोरी स्तु
ति॥ पुत्र उत्पत्ति चकारी नव समुद्र दितारी। सुजग
धत्तुर धारी पाप संतापहारी। प्रबोध चारु चारी
चक्रधरण रतारी। अनुकूल दया रूपा जीमा पश्चा
कारकारी॥३४॥ चोपई॥ तारण वचन सुणें जब
गोरी। शंकर संग गोरि कें दोरी। अंतरी करहें कें बो
लें वानी। पूरण आस तुल्परूड़ कीवानी॥३५॥ गाहा
चोवरी॥ अेहारा य इहनी की बूझी पहेली अैसी का
ई नस रूं॥ विन आज निछटा चढि आयो। जब चे
त्यो तब शिर में घायो॥३६॥ देव चरित को अंत न
आवें। ठंनो नप अवरें कछु गावें। मधुमालती सों

ह्रं नरदेही: एक शुं न घुगारे तन तेहो ।३७। वसुदेव नंदो
प न ह कसी । घुंगटे रागकि सत ऋ विनासी । पाप्या सक
लज मो ह विसतारयो । ए संकरा नुवचार उतारयो ।३८
दोहरा ।। ऊकेउन पुर नी घन सुता दिवरूकमनी बाल । ह
री हरत हारें असुर सेन्य सहित सुपाल ।३९। स्करस्त्र
सु स्पति नं मिलें । सिधुसुताकें हेत दीघविजोय हरिले
चलें । गोरारत नसमत ।४०। चोपई ।। उग्रथाह बानाकेसु
र घर । लेराषी सत मेलें धवलहर । जत नकी … ए अति
देव नकेंमर । पिंजायताकी हरिताकें घर ।४१। दोहरा ।।
जेत माल मधुमालती । त्रिकुंतन एकसरीर । एह परे त
रे पवायो । तक घार अरू नीर ।४२। चोपई ।। कोठी …
म ध्य संग्रह । जेतो का हा वाके नसुं कहा उ । देक च …
उ न हा जाने । उ जीयमें तेरो गूब जाने ।४३। सुगे हंस

डुरो न हो अवहो । जो न्यो जाकुं परें तरत बो । सु
त जो निरुंम विरूमदोरे । देषो रूप भासिदो उपो
रे ।४४। चौ का ।। हंस स्वेत बक स्वेत । को न्यारो हंस
बकर्या । सी रनीर परि स्नाया । हंसो हंस बको बक
।४५। दोहरा ।। हंस स्वेत बक स्वेत है । नक खेत पया स्व
त । पस्यो मां मलें जानारें । सो घस्यारकें हेत ।। श्लोक ।
काक कृष्ण पिक कृष्ण । को न्यो पिक काकया । प्राप्ते
वसंत समयें । काको काक पिको पिक ।४६। चोपई
।। वायस घर पिक इंड डरावें । तो जुबा इसत्येद
न पावें । कुंन न्यारे न्यारे उडि चरें । अपनी अपनी
ज्याति न हो डरें ।४७। रष वनिक बनिकें को उ करें ल
षमा रूप अंस तिनंधरें । विसन अंस सो उरा जा …
देव अंस सविनल रंन सुरो ।४८। … ।। पारबतां के

वचनसुणी। चैतन्योनृपचंद चरणेंराषी
बागसुरी मेटीसकलदुखदंद॥५०॥ मेंइतनो
जोन्यानही। देवनकेरैंनाय। लोकलाजतें इकच
ए। संसारीकेदास॥५२॥ मरवेंयोकोइनोफरें
ज्यारमुवासजहोय आपजसजीयनिजजनमधु
न करोकहैं सबकोय॥५३॥ अथ तारा साहि
कौ॥ दोहरा॥ तेरोकवहूसमनहीं। विधकेंलेषक
रुष। गईसोफेरनआइयें सबनृपनीरनमष॥
५४॥ श्लोक॥ भाग्यंफलंतिसर्वत्र। नचविद्या नच
पौरुषं समुद्रमथनाजेना। हरिर्लक्ष्मी हराविषं।
५५॥ चौपई॥ बलपौरुषबहोतकरनिरवहावें
लिषेंकर्मसोउफलनलहावें। मथ्योउदधिहरिल
क्ष्मीलेंह। हरकेंकंठहलाहलकेंह॥५६॥ राजा ताकौ॥

सुणि तारणतें चली वताई। ज्याकुंलिषीहतीसो
इपाई। जगउपहासकरीइहजांगें। इनिकेंसंगह
जकरूं तोहि भांगें॥५७॥ उत मकलककुंसुनीन
एती जौतेंनिसवेलउकेषेती। वरवनीयाकेंआ
रारजवेसी। कुलकलंक अकजगमेंहंसी॥५८॥
दोहरा॥ मुखतेंतोवनीयाकहै। मनबनीयाकुं
होय। अबवनीयाबनीयानए। बनीयाबनीया
दोय॥५९॥ चौपई॥ दोयवनाइकवनएवन्या। ता
मेंइकद्रुमणकीकन्या। रजपूतअरूउग्रवनि
कविशेषें नितक्रमिलेंतिहांकहांउपेषें॥६०॥
देवनकोकोउ नंदनपावें उंजिहांतिहां आचार
बतावें बलपौरुषआकारनकरें इतनानइतो
हिकाहासकरें॥६१॥ श्लोक॥ आकारेंगितैर्गत्या

चेष्टया नाघणेनच॥ नेत्रवक्र विकारेण। लक्ष्यते
तर्गतंमन। ६२॥ साकोरेसबकुंफल। जेगकं
गकेंनेव। नाकवक्कनविरेते। डरेंनमानुंसदेव। ६३।
कंकरपथरपरपायें। मणिमाणिमूकोजाति
इलतचलतसुगपरषीयें। तोसुरनरकेरवात।
६४। चौपई॥ जोतुजासुंकोमनविपरे। जानवेगेंज
लवारंकरे। तेंरेतोसबजगनिबाता। कोहेंनसुंन
तजेरहापती। ६५। दोहा॥ मंत्रीकारणनपकहे
चित्तदेसुनीयोराय। जानवेंगेंवेगोकहा। सोमोहि
देदवताय। ६६। तारणसाहवा ख्या॥ दोहा॥ तारण
नपकारणकहे। चित्तदेसुनीयोराय। सुन्यो तो
सबकुंकहुं। दोयपनंगकेंराय। ६७॥ अथ औ
रगोना। पंषीको प्रस्ताव॥ चौपई॥ पंषीएकओ

रगीनोकोई। उतस्योहाटबाजारमेंसोई मोची
कोघरकूठतआयो। मोचीनुंउरहोबोलायो
६८॥ मोचीकहेंनेकसुमजावो मेरेंजायउसो।
सेंपावो सबेंसचवारोंमारगएहो। उरहो
मोहिघरेंलेजेहो। ६९॥ जिहांवासनेमेंवरहो
थस्यो। पेगेसापजीतेंडस्यो। चोरगानाघोरें
चढिआयो। बांबकेंचोरेंजहिवनायो॥ ७०
पकडोमुंउवरणनसुंदाबी। चंबकेंकरदीनो
उनेंपताषबाध्यकरलीनो। चव्यापंथकछुप
हेंमनराष्यो। बांउदेहामाहिलोसार्पवीकरें
सर्पउनेंराष्यो। ७१॥ दोहा॥ के सर्प साक्षी॥ फिर
रेंनिरलजसर्पकुंनांहा। पांउरिमुषपरसपूर
तोहा। हसतनहासोकारनकोन। मुरषमुंदरसो

माने चमक
देंजाबी चंमरो
करीवेगरस्
गोंहं चपटो
जयोचापसुं
रतोहं। ७०। बी
धरोकरावो
के ३८

सुखमोन।१३॥वं पमर्पवादक॥जो लुकीम
६२ परें नहीं क्यों [illegible] बोलत नारी। कु
निवें जठन सबे विचारी। वेगो फिरें जब बा
बी बारी।१४॥मित्यो न कोई भेद बतावें। बांबी
में ता तो जल नावें। सघरो मालबोदि कर ल्या
वें। तब तेरो बल ठाहर आवे।१५॥एसब बा
तसुनी चोर गानें। को बोले जावे चिकुं कोने
वेगो आरुअ नवेगो मापन। वाद विवाद क
र दोउ आपन।१६।जब चिंतयो पनंग जि
हां ढोरें। चमक्यो ऊद पस्यो तिहां घोरें। हाहा
देव षायें ते कंथ्यो। करतां आ जसं भरन भो
च्यो।१७।ऊंकंथ्यो कुनि घोरा षयीं हें। निसवा
रथ इह धो बापरहें। काढि तरवार धाय के मा

रूं। किसि कार काढि के मारूं।१८।वंधमर्पवा
की॥दोहरा॥आधम ज्यो बो थ्यो बोगे ऊसत
ढोरें मोहि। सुन पंथ्या पनंग कहें। चढि वाहन
उं तो हिं।१९॥आरगा।नेनाइकः॥ अविमुह
र गजसथकि। वेनन चितधराय। सुगन पत
जें चिकुंन ढुंका मूए देषकराय।२०॥नागवाई॥
पनंग के लुपटं तेरें। गजनाहर समकथ वे
स्या पद हम ना हरी। पुहवी पर समथ।२१। वेद
विहद आरु मंत्र बसि। सत गुरु के उपदेस आ
रि कुलेमर जादमें। सत आवनी आरु सेस।२२
नापई॥जो सती सहितसें सिर आवनी। होचु
माये सो हेंनी की बनी। नारा इन कहायें सो
ई आसन। जो कोई लेहें सो कहायें ता सन।२३॥

तेंतो मो सुं नलपणकीनो। मए कों अपजस
कोई नली नो। अबकुं मरत मरत जस ले
ऊं। बहोत कंचन द्रव्य तोहि देऊं।८४॥ इह
बोबी लेरे मुष आगें। तामाहि सर्प चोहो नि
त्रि जागें। कनक कराहि तास परें बेठो। रू
पणकाल रूप होय पेठो।८५॥ पाथर सुं धर
णी मन मायें। नकाकुं दीयो आपन ही पायो
दायो नहा भूत बेधन कुं नाई। मरि करि
यो नि सर्प को पाई।८६। डुं पंथी मो बचन
सुनीजें। बोबीकुं लातो जलदीजें। मरें स
र्प जब नितर नों जें। तब उह द्रव्य काढि के
लीजें।८७॥दोहरा॥ रीमरसपर नांरटे दे
हा आ न अन रूप। पंथा सु उपगार करि

ळं म्यो बां णो सरूप।८८। चोपई॥ इह वचन कह
पनें गज मर ही उर गोनो मन विस्मय धरही। इ
नतें मो कों मर मर्त आयो। सुपनों तरसी ईश्वां
न ऊषा यो।८९॥ बहो करो हो करा हा कहां ते ल्या
उं। दस पषाल पानी ज्याव टा उं। इतनो सां मो जब
करि पाउं। तब मो जलबो वो में नाउं।९०।दोहरा॥
स्वाति बुंद के हरि करज। पन्ना ग पास गरथ। सरा
स मर थके सरण। सो जीउ तन आवत हथ।९१।
जाधन परपन गरहें। मुगताकें जर मध्य। मग म
द ना निकुंर गकें। सो जाउ तन आवत हथ।९२॥ चो
पई॥ इह आरं नहमनें न हहोई। राजा विना न षो
दे कोई। एस बबात रायपें सुनाउं। मेरे नागलियो सो
ई पाउं।९३। बांबीके। पर्त्ता को:॥ मोर जी॥ श्री

उरगानें कौ वात। पनंगकें सघरी सुनी। यांबीकें
मुलकात। सलुषी होय बोलें कुनि ॥९४॥ चौपई
रजपूत चुगली मन धरें। कुनि घोरो कुं हराइ
करें। ऐसी नांहि वातारी। तो कुलवेस विधाता
भारी ॥९५॥ दोहरा ॥ जो घोरा कुं हरानषे। तो चु
गली हियें रजपूत। वहें जननी का भी लषे वहै
बूनी याको पूत ॥९६॥ चौपई ॥ उंरजपूतरा घर
अतेरी। जनी सो हत्या चाहें मेरी। वो न तो करूं सो
आय मेंआनो। कुंआनु कें उमहा आनो। ॥९७॥ एक
मोहर मो यें नित लीजें। दयादो नमो पोइहकाजें
पेढी जगें तो कुं पोह चावे। जो इहका हर रहें चापा
जं ॥९८॥ नेरगांनताल्प॥ जो सुन्यो सो नित्य हापा
उं। तो बो बी काहे कुं षो दाउं। तो हा सेवा सरि

करूंउं। आनहा हूध ओनि तो हि पाउं ॥९९॥ सुनरें वी
रञ्ञ बहो कुछ दीजें। तो विन मेरो जात न थीजें। जो
पतीजें आप नें वयनां ॥१००॥ पनंगवाइकः दोहरा॥
तेरो मो कुं वचन न्ही। कुं अव हो देउं तुरत। यथा कछु
औतर परें तो हारें हरपत ॥१०१॥ उरगानवाइकः॥
श्लोकः॥ मित्रद्रोहा कृतघ्नश्च। येनरा विश्वास घात
का। ते नरा नरकं यांति। यावचंद्र दिवा करौ ॥१०२
दोहरो॥ मित्रद्रोहा कृतघ्न। विस्वास घातकरं त
चंद्र सूरज लो तपें। तो लुं नरक परंत ॥१०३॥ चौपई
बंधे वचन पनंगनरदोइ। तो जो बात न जोनें को
ई। हूधकटोरा लेनर पावें। एक मोहर नित तका
ले आवें ॥४॥ युंहा करत मास एक तिनायो। आ
में नई सो चित देसुनीयो। और गांनें घरविष

लागो। नवोदु संग नयो उहां आगो॥ परोढाहेरा:
नागरनाम अमरावती। अमरसेन नृपतास बांवा
पी इक कोस लग। और तानेको वास।६॥ ताके घ
रकी संपदा। सघरेंमान सती न। अपनें अपनें जो अ
रुं। एक एक कथा लिन॥७॥ छोटो पहेली नारिको। रू
जो व्याह्यो और। उरगानीको और मती। ताकी मति
कछु और।८। मौया वाइक॥ चौपई॥ अहो कंत
मुझ आचरिज आवें। नित को मोहर कहो सें आ
वें। वाकू रन हो सो न पर्थं पावें। इह वा तमो कुं
समझावें।९। और मौन वाइक:॥ उरगानो जं
पेंशीआ तो हो। इह कछु वात केहे न कुं मोंहो। ना
रो इन जब रूगे तो हो। सुष संपति घर वें गं
वाइ।१०। महा पुरुस इक मो कुं नेट्यो। दुष सकि

ल मेरो सब मेट्यो। कोई सुनत वात नहीं कीजें
कुं आउ सो चुप करि लीजे॥११॥ निज वाइक: दो
हरा: उत्पावें कहा ठौर सुं। सो मोहि ठौर वताय
को न देखत कुं मिल्यो॥ सो मोहि नेंय न दिषाय
।१२॥ दुरा चो परनार सुं। कुं कुनिकर कुंजार
समझि वात मो कुं कहो। जीयमें सोच विचार:
।१३। उरगा नेवाइक:॥ आलो चंद देष्यो नहीं। विन
देषे की आल। अपल्परां कहा सुं कहो। जुवें कर
त ज्जंजाल।१४। पुरुष है इसएन हो। जो लुगतेंद
सनार। सा धत्रि याकें सें कडुं। कुकुनि करुं कुं
जार।१५॥ लंघ न एक दो या व्यार करि। मैथुन
की अति चाहो। नो तर आपें ठौर लुं। वोलत है

मुषषाह ।१८। साहेहेबाक्वचिकित्रीया। नेक
रथ नुंवेंधार। इनकेंहिगामनमघासेरें।किष्
वितबेतिहमार।१९। रहेतबंधेवरसनुं।नो
वरिबी ननरहेत। पारापतमुंकपकें।जोषें
जालपरंत।१०।।पाई।। नई नारी चरूपुरुष
पयां।नो। इनमेंका हानल प्रणजाणे।जो रें
नानपरेंमहापोते। नेंसा बेलवा। इनकें जोतें
।१९। मेंजो एपे मेरो घरबसायो।त्रिया केंको
मयोंकानहोयडसायो। केंअध बेसरयोवन
पुस्यो। सुद्धामाहकरें सो ईफीस्यो।२०।डव्याला
वनकोदोसलगावें।सोस बतेंरेंलायनलाबें
कनिस्यारेंलरकासेगलें कें।मेरेंसबेंकरले

करमेकें।२१।।आतसेमेंमेंड्यो संगुलीनो।रूम
कटोरेनेनरकरदीनो।जबलगुको बांबाठि
मन्नायो। भाहिसंक्योकारूसीसनुकायो।२२
साहिवाक्यौ।।दोहरा।।सिंजघवगेंवातें कंतो
सेरचढ्यस्कंन।यामें कछु चल पल नहीं।क
रो मतखनिदान।२६।। सोर संपूर्ण।२९।। बो
पई। सांमी इहजेकेंहें मेरो।सघ...
वक तेरो।मोहिदेसो इनकुंदीजें। इनके
हाथ नहुपयपीजें।२४।पनेंमुकेंपरसीतपत
आवें।लरकामोहिंदूधपिलावें।यामेंका
जल पल नहहोई।मेरेउनकोदोऊकपषो
।२५।। कहिनसकें ... तिथरक्यो।जे

३९

वरं...

सैंरुगानकु चबायो चरको। फो दिग्भ्र स्पतिं बा
दक आई। सुसंरो विवबफ कुगे रह षाई।।
[illegible] वफ ऊगे रविंतु लग्पो। सुसरोभ
यो सुवेर। ताहि सब्बा न पकहा करे। पववस्प
प म्पो कहद। [illegible] ओर गीनें ल रफ
नकी गेनी। परवस्प पस्यो सभरी करि भौमि
पिता फ्त मिली पयपि जावे। वो धोरो जसो
निस्पल पावे।। [illegible] मारि नयो लरको फॅक
वें। इकमो हरगिनतको लेजा वें। मेसुलो क
रत मासइकवातें। जेठो मन मेंकछु अवर
हा चितें। [illegible] ढौंगी हा पुसदा तारा वहें। तिन
सापन ऊंमारननितचाहें। श्रहिफरें जाउसंभ

६८

धारें। इहचंडाल मोहि निहचें मारें। [illegible] कांसे इ
य पाव ए सुखं नावें। इहअलतें जबकां मफो रावें
सांध कजोर फ लताको फेरें। मनमें गुरुसुक निला
हेरें। ३१। [illegible]।। इहहनकें तिगा हजु। सघारो
मा लेजावें। विहेल्प को खि गरें सिसु। सतपैठा ल
गषाव। [illegible] इहलरका इ
नकी सुध्प कावी। घटा घटा कछु लहा न साची। ताकी
ताकां ढीगो चलो। जगत नांग पस्यो चारू पायो। [illegible]
रुस तहां अंनले गयो आगें। इनफ डोंग सा गसी
लागें। नाठ नाठ वां वी में आयो। वाकें पिता सोंउसु
ध्य पायो। [illegible] मराकर
ममेंसुलिषो। तो तुमें धन षाय। जबरंडी विगुरकेरे

तबई फलपाय।३५॥ किसरंडी विग्रहकेरं। कित
न रका कहि पाय। कि कमेरी मोहरं मिटे। सो आगें
बात बढाय।३६॥ विग्रहतें धन जी जहां। विग्रहतें य
रजाय। विग्रहतें विग्रह वढे। का हारं कक हाय। व।
३७। विग्रहतें रावण गयो। विग्रहके रंपिक जहां तहां
विग्रह परेलो। तो तहां रही न मकं।३८। चा। वा
॥३९॥ मैसे कछु हसन न नहा। सुनि औरमांनें राव।
पुत्र शोक ना ऊंडचो। मोहि गिग को घाव।४०॥ वे
रच बढ्यो चित नांहि मिलें। जो र मिलावें जंग। जो चन
चीतन परगटें। साषी न होवें संग।४१॥ तेरी मेरी
प्रात थी। सो सब निबडी आज। तेंरे राफल पाइया।
वाचा सकल सकाज।४१॥ इह सुनि औरगांनो च

ल्यो। सुतकें सनमुख डी तिज लाया चीया सुसब
बात कही। इह कछु जी हन पत्या य।४२॥ तें जरकाकें
अपदीयो। जे इथस्यो कछु अंत। मो सुं भेद दुरायके
मिथ्या चोषं कंत।४३। चोपई॥ रांड उजो उआरू मा
तो सांझ। चढा कंबो न आरू का डो। धरं गा। ए पांचे
घर बाहिर आवे। अपना र जाति जनावें।४४॥ न
पु आगें जाय रंड पुकारी। झूठी साची केहें तन हा
री। उतपग यथ समझ बुलायो। औरगां नो सुन तव
हि आयो।४५। राजा ऊसमर सेन भ्रम धारी। सुनी वा
त जब नारी। रंडी के झूठी करि जांनी। औरगांने का
स घली मांनी।४६॥ औरगांनं वा ऱ्यौ। दोहरा॥ अ
न चिंत्यो कम मआरं नायें। सजन विरोधे बार। वोके

82

सपराधन्त्रिय मतो। तोम तको गहर च्यार ॥४३॥ चौपा
ई॥ एक मोहर पावत व्योसारी। तापर मेश्क वात मुदा
री। अब तो कहुं न कावें जावें। वसी रैन कुता षेवें।
४४॥ गाथा॥ आमरस न ताहक: दाहिनी॥ मेहरी को ध
न पुरुसलै। चाकर को धनराय। पावें तो न चन्नि ष्य
करें विनपाए कहा धाय। ४५॥ और गाथा॥ नेवाध्यो। ताप
मो तुंरो जमवायो दाजें। वाबी में ताती जल दाजें
बोबा लो दषादि कं ल्यावें। घरवें गो तो कपी हत्या
उं॥४६॥ दोहरा॥ बांबाबी देषी दायके। राजा नरसो
नं मार। औरां नो चाकर रह्यो। रंडा कें मुह छार
॥४७॥ श्लोक॥ परस्पर ंच म मा लिष्येव दंति नराध
मा। ते नरा ज्ञं लं संदेहो। वल्मिको दरपन्नगो॥४८
॥ इति श्री और गाथा पं॥ कीपुस्तातसंपूर्णं॥ चौपई

तारण में मो में पर समुझायो। चित्रसेन कूं तो सब मिटा
यो। मधुमालती जैत तिहां वारी। चरण खेध तहां गो
दपसारी॥५७॥ चरम हषि कूं कछु न जांणु। मोहण सदे
व नरकूं कहा पिछांणुं। मेरें मन ता गुण सबें विसारे। एके
यक मों राजकुमारी॥५८॥ सुषपाल षी तीन सत्यकी
नी। नगर सो ऊ चलवें कूं दीनी। घर घर तो रत्नजडी व
धाई। कमकमा जरी तो सुषपाई॥५९॥ दोय पालषी
महेल में आए। मधु तारण के गल लपेटाए। उहां बरा
यो मूक विप्रकुलयि। उचे कं भर मी तगमन तिष्ठ
यो॥५६॥ जैत माल सत दुरकडी जी नी। ऐसो मालती
तोहि मन मांनी। दोय कन्या इकमंडपें व्याऊं। मेरो ध
रम रहो कं पाऊं॥६०॥ राणी वाक्य॥ धरम बाहत

बहुतमकरते। तो कैसें धंधकी एहमपरतें। कन्याको
उपहासन होतो। पहिली समझ परी होई तो तो। ५७
तनकाकुं कोकसो न मांन्यो। ज्यो भली नो सो ईश्वपनो
जोन्यो। लघ्वी घोडा हमसकु जाए। चवनप अपनें
धर्म पें जाए। ५८। पद्म। का॥ आठ वर्षा निवेत गोरी। न
व वर्षा सुरोहिणी। दस वर्षा नवेत कन्या। अतऊर्ध्व
रजस्वला। ५९। नापई॥ षोडश वर्षक हातु रहें। व
र प्राप्ति नई वरकुं चहे। जो वन समें पडा वन उ
मनाई। संचित ऊं तो सो छिम पाई। ६०। वाहा गेसु
रति कुं मेला। उह जागो जुं नगे जन खेडी। बारी मांज
दोरकें पकरयो। जतमात्रनी दो कुं मिलो जकस्यो।
६१॥ जब साप्पन कन्या धर्मवीती। जारी वर्षसमनहे

जीती। गंधपवाहरोंमसरकीनो। प्रथमसमागमको
रसलीनो। ६३॥ कूर बलो कुन्य तिहां कुंतो। पाविंको
होजुद्धकून सेसुतो। अति माहा मंत महा बल संगतें
पोहरपोहर लुकुं बरी जुगतें। ६४॥ एक तजें रूजाक्क
नि मंडें। त्रीयको आसन नेकं न छंडें। एक्क नि जुवमी
कीरसमाता। कुतविपरीतक बुन होजाती। ६५॥ कोक
आसण चोरासी चाडें। कोउ घटें न कोउ वाडें। घुंटेध
र रस मांणे। मानु घरे विफेर हिदोलें। ६६॥ दासी ब्यार
हिगा हो मेंरा श। छिन्ना चरित्र देषकें साषी। मो सुं कां नि
कुहायो निसारी। त्रे कुनिनारी वरहोकी मांग। ६७॥
६८॥ कामरहित कोई होय हें। त्रिया पुरुस में कोय। रुठ
रसनी कें मम ऊआश्रो। विनदें सुनी यो सोय। ६९। नापाई
सा तदि वस अपनें रस षेलें। ता पाछें उम विगूरूमे जः ५

वरसंखी। चित्र...

८२

वृद्धत्वप
नोपर्पयोयंः
नोमेत्रीन्न
नोमुंडथ
रसोवे।७३
श्लोकः॥च
वितर्वीन्न
वत्सेवःना
लिकेरफलो
पत्ती८

सो विग्रह हुमहीको नागो। दसकुंजायकें आपहो
नागो। ६९॥ सबकोई अपनो पानी पनराखें। राणी
कनकमालसुं नाषें। कितएकवातापुपति अनेरी
साहिबसुंकोई कहें न टेरी। ७०॥ श्लोक॥ आयुर्वित्तं
गृहं छिद्रं। मंत्रमैथुन भेषजं। दान मानाप माने
च। नव गोप्यानि कारयेत्॥ ७१॥ चोपई॥ नृपति मं
त्रते वहो विचारें। मति छिकनीसोई सब हारें जा
निं बुवता। गमितवंगमत्ते वा। राजसुतांक पिछ्रव
ता। ७२॥ चोपई॥ नहाराजा वाईकः दोहरा॥ नालिके
रतरु नीर जुं। राजक पिथफल षाय। वे फल जलक
त होय नरे। वे फल देहें कित जाय। ७४॥ दोहरो मा
ठे॥ जोलुनदीयर नीर। ततचें फीनिर्झर झरें सरस
केंनहीनीर। रूषयोदावेंकालहोय। ७५॥ अपरश्री

रामचंद्रजीको प्रस्ताव॥ राणीवाक्यं॥ दोहरा॥ लंक
पुरजा लाग्रीयले। चले अजो ध्याराम। तपवेगा तिहां
अंजनी। ताहिंकीयो परनांम। ७६॥ अंजनीवाक्यः
कह्यो कराश्रीरामकुं। लछमणकोयो कालीवत
आवक्कसीला कहलगीतक्कं। कपूत कह्यो हनुमं
त। ७७॥ हनुमंतवाक्यः॥ निराहार द्वादश वरस
लें। इंधन आमेनकोय। लछमनकें क्रजतिन
कह्यो। एह आचंनोमाहि। ७८। अंजनीवाक्यः
कंधेंचढि लंका गई। सताक हावें आप। तबहास
राप न देसको। सो जर बरटर तो पाप। ७९। हनु
मंतवाक्यः॥ तीनलोक तारण तरण। जुराजें पंच
कनांम। माता सुणहणुं मंत कहें। सो कुंरामकरां
म। ८२। अंजनीवाक्यः॥ करताहरतासस कलमें

६२ घटिघटिरह्योसमाय।कनककमगनांहारयो।सो
विनमकितजाय।८३।श्रीरामवाक्यं।नकृत
पूर्वंनकदापिद्रष्टा।रघुनंदनस्यपश्यातगृहाने :
विनाशकालेविप
रीतबुद्धि।८४।श्रीरामचंद्रजीवाक्यं॥रामच०।
इहजईसोनांहिटरइहसंसारकीगत्य।सत्यस
तीगोतमसुता।ज्योंउमकहासोसत्य।८५।श्रवरए
कहजीकहूं।तेनंद्योहनुमांन।श्रीहसमुद्रजाके
नहा।बलपौरुषयुगजोन।८६।वंसभेदरावनक्ह्यो
यो।श्रीतामोहिमिलाय।लंकइजालतहाजयो।ज्यो
हनुमांनसहाय।८७।पदमअगारामधमुषा।मेरे
हितकोकृत।मह्यो।धनमंनहें।सोतेकिसेंकह्यो
कह्युत।८८।श्रीजानकीवा।८९॥पिरसुतकुंश्रस्त
नीदीयो।चलीरूपकीधार।रणनाटामेतारसु

नईआलकीपार।८९॥इनमेरोपद्मनांपायो।कित
हूंगयोउजोर।बालपनेंरविसोंसायो।मेंकाढ्यो
मुषफोर।९०।तेंइतनोकाहेंउंकाच्यो।पदमअगा
रहजोरा।रावणकुलकासहित।सोकरतोधंधस
जोर।९१॥सायरबांध्योकवणपरिं।बांदरमारें
मार।श्रीभभंजुरीनीरसब।क्युंनपायोसोवार
।९२॥तवअगस्तकेसेंपायो।वेदनआयोसोय
बावनकूंतेंउपन्यो।सोमेरोफतनहोय।९३।श्र
यहनूमानवाक्यं॥सातससमुद्रअचवनकासूं
जेंफोकितोइकनांम।दक्षिणपथाउत्तरपरूं।ज्यो
रघुनाथसहाय।मेंप्रभुकीआग्या।विना।नसकुं
रणउगाए।९५॥प्रलेंकारजगकुंकरूं।रावण
कितोइकआहिं।पेंप्रभुकीलाजाइहां।जाकोत्र

पउसनांहिं॥९५॥ ज्युं कं नारवासन घके जैपे
र घडाइहु योग्ना। घडि नं जे फनि फिर घडै। याके
अचरिज कोन॥९७॥ तें जक कें रघुनाथसुं। ता
कोउत्तर एह। सेस सहित दोरस नि सु। कहि
न सकै कछु तेंह॥९८॥ बकें कहें सोई सुरहे
उत्तरदें उनकों म। अंजनी आप्पा लहा। चलें
अजो ध्यारां म॥९९॥ इति श्री रामचंद्रजी को प्रस्त
वसेपूर्ण॥ रांणी वाक्यं॥ चोपई॥ सजासुं
गंनी इहु जाषी। सी तारां मनचय सो साषी। महा पुरु
स इतनो दुषपा वें। और नकीति हो को न चलावे।१००
देव मुनी सरसों न सरा षसा। सो स बबंधे जग कर्म
के वस। लि ष्यो होयें सोई फल पा वें। बल पौ रुष क
छु कौ मन आ वें॥१॥ अब कं आवर कउं कें सी
मधु मालती जे तको केंसा। हमतो कहें कुंमरी दीउव्या
हो। नली नई हम सुंहीचाहो॥२॥ गंध्रुप व्याह राम स
र कीनो। देव चरित ना वे सोई जानो। अ बकहें अ
पनें केंसा काजें। याको मोहिं वेगसीष दीजें॥३॥
रांणी कहें राय सुमिलाजें। कारण कारण कछु इक
कीजें। गंध्रुप व्याह कोई न जांनें। अपनें हिर आप
उसयु गाठी नें॥४॥ एती तुइक गेर मिला वो। जीवत
वहु तहां जगें गावो। फिरें जा व तो ऐसी आवें। कुनि
पी छैरा वरें मन ना वें।५। राजा वा क्य॥ मो कुं बुध
दे न तुम आए। जें उपर तुन ल गाए। बुज्यों तक
रति विस्तरें। बिनबुझे नु गहा सो करे।६। रावरें इ
कलर में कं वाहि। अपनें सुग कं संकोई चाहें। त

तुनकें अस्तल न्यारा षें। रानी सुजा इह नां षें।७। रा
णी वाक्य॥ दोहरा॥ मैं अब तुजो न्यो नहीं। नहीं अ
ऊकोसे च। मो सुनेद डराई कैं। राजा करैं अपंच।
८। कन्या को उपहास करि कै। तीन घर कुं जैं हास्यो वेत
कब ऊक जाय ऐसा भरें। तिकूं मारें कोनें त॥९॥
न्यो तुम आब ऐसा कहा। मेरो मित्र नरनरम। आ
य प्रतीत आई सबै। अपनो एहा अधरम।१०। रा
जा वाक्य॥ दोहरा॥ तुम कां जो न नये तुम्यो। औ
जऊं चत्यो उपेच। दीप गहा लैं देषायो। सावे नगर इ
हमेच।११। तीन फ्रोज मेरी दली। ता पर तप ज्यो
नरम। चोथी वरी यों हम चेटे। वोयो विश्री धरम
॥१२॥ हमन पतीजें जु गकेहे देषें आपनें नेन।

एह एक हमद लस हस। कें कर मारें सेन।१३। अंजु
र जुन कें ब्यान ज्युं। तिसा गि जोल की चोट। एक तु टत
सहस कलंगों। फूटें कोट हा कोट।१४। प्रथम एक हस्ति
हरयो। महा मत्त गमय मत्त सुं उन्नि सुं उच्छिन ज्ञिन का
ये। छिद्र विद्र की एदंत।१५। वकपंछी नारं उडुन। गि
रा समांन सें दोय। हाथी घोडा उंट सब। ग्रास गए दल
सोय।१६। केहरी एक महा बली। उन मारें गज कोट
कुनि त्रिम्ल ताकूं लगें। जित तित वा की चोट॥१७॥
मैं हास्यो तुम आंपनो। रहा न कछु करतूत। राज्य पा
ट इन कूं दीयो। वे ह कन्या दे हूत।१८। चोपई। मेरो
राज अवर को ईषाई। इह हूत अरु इह जमाई। कन्या बा
ह उपहास करि देऊं। जग मैं जस अब एव न लेऊं॥१९॥
तब राने गीव गबुजाए। निरा न्याते पोतपगाए। देय देश

४५ [illegible] तुलाए। अवर सरूप विगमेंगाए।२०॥ जेक
तुसज्यवाहको कोई। अनंतको गारचरें केई लेई अव
र नेड्रारथकोइ व्यको ढामिरेजस कुंकलसा गाढो॥
२१॥ नगा नगरु॥ दोहा॥ एहस सरूपई व्याहको कुल
माईतब पाव सोहे आगें कररहें। दिनदसपेंहिलास
व॥२२॥ चौपई॥ आठें मेंउपसुन्न मचनाए। जंचपत्रवा
सपरगाए। वरकन्याएक घरराजें। बडें निसानमच
जुंगाजें॥२३॥ गनग्रंधुपचापवरा अनंगा। संगीतक
लाकरेंनाटिकसुरंगा। गावहराग नत्पसुधनचेंमा
नुं इंद्रसुनगसुरसंबें॥२४॥ बोनें फेरें डलहारीडल
हा। बंधेमोरसेंकुरा कुलहा। सुचगासुरनां आनकें
चोरा। चाअधरलेतन पावकी नोरी॥२५॥ दोहरा॥ डुल
हेकुंनिरखेंनिया। जोगही मुरतिकाम। तापर डुनवा
रीचढें। चितवंतमकरधेवांवोम॥२६॥ बसनचुलो

नेदेहकें। पंथमंलोनेंगोह। डोनचुलोनेंपिरनहीं। पु
गयोकीमसनेह॥२७॥ आरतीलेई आई त्रिया। केहे
तसवासनसोया। तिलकलगावनकुंकरी। सोउचेंह
थनहोय॥२८॥ सोरठा॥ मिलीकरि गालगावाव
ली। मधुदेषीमईमोन। मंगाघंटनमन्यरही। केहेन
बारीकोन॥२९॥ कामरूपअवतारमधुकुंकहा
लुफेल। जबइहव्यापिनतहोयें। बपरात्रीयावेल
॥३०॥ आठोत्तरसोव्याधिमें। मनमथव्यापाप्रबल। ता
कोवेदकहाकरें। जोंलेंताहीसयल॥३१॥ दुलहेरूपस
नंगकें। देषेंसुतेनकोय कवइकदहनकोकहुं। चित
देसुनीयोसोय॥३२॥ दुयपालषीअरावको। जोडल
परदानांहि। सुंदररूपविलासहग। होयडलनिताम
हि॥३३॥ पहिलेहिकंदपकीलता। तापरिकायोसिगार

८६ ना वन रूप कहे सकु। वरनुं कहा विचार ॥३४॥ जो देखें
कुनित पटरें। दिगंबासा सम जहा जथ। रूपतिया को क
हा कउं। मानुं अंगसमथ ॥३५॥ वा नें फिरें बाजार में। धी
एत मासें जोय। नुता हार नपदेस के। देषण आए सो
य ॥३६॥ देस देस के नपति सब। अवर नगर के लोक
निरख त नैन न मुरछ त सबें। सुष में वा चें सोग ॥३७॥ को
उ पी पर वोट कें। कोउक सेकत अंग। को उठें गा घर
ले चलें। सो चत विलषे रंग ॥३८॥ वाजा वजाव त सो फि
रें। अवूर टहेल वसाय। चुवन परें चीरा कसा। नर में
रसो न काय ॥३९॥ मेहरा कुंता सो गारहा। नइ न एसी
कब। वपरं पुरुष कुं कहा नयो। जायें के मूळें सब ॥४०॥
कूवा तभवने सुनी। सो च नयो नपचंद। नो कतमासे
मुं मुए। फेर नयो कछु दंद ॥४१॥ गं नीचा। इक नं को

ई मारें नां मझो। छिगासन मां निरूप। मछगि ति इन
कुं जन ई। सो परे विरह कें कूप ॥४३॥ नर समझ जो वा
नें मिलें। इहां नां हां को इकार। जहं देखें स वयू गत कुं
व हे देषें व कुनार ॥४४॥ दिन दस नां हीं मधु नोहा मि
लें न वया कुकें धंध। आते तन आनंद चडे। छिगानफि
रें जुगफंद ॥४५॥ काम सर्प्प षाए सबें जहर नहरका
दंत घरी चारें मुरछें रहें। पाछें जए सचेत ॥४६॥ चौ
पई ॥ पाछें पर दें वेग वंधीए। वाजा वजावत म
हे लमें आए। मालती काम चरित दे षाए। सब न
पलोक देष सुषपाए ॥४७॥ नुं ती हार सब गए गि
कोनें। नगर लोक स घरे। सुख मानें। इन प्रवाह
जगत कें दोई। कष्ट पा सो रहें न कोई ॥४८॥ घरी

४८

साथकें लगन लिषाए। वरकन्या इकगेर मिलाए।।
पाणी ग्रहण वेद विध्य कीनो। बहुत कदान विप्रकूं
दीनो।४८। चुरा विकत कलस बनाए। फुनि डुलहें
डुलहीं नितआए। लावरा फेरा सात कदीना। अपने
कुलकर मसो ईकीना।४९। सिंघासन आसन कैन्या
ए। आदर करता परबेंगाए। जैतमालती दोऊ कित
आजें। मधुनी इक मधु मध्य विराजें।५१। दोहरा: उ
तजैत इत मालती। विचें मधु आनंद। एकगेर मानु
मिलें। नगुस्कतमें ज्युं चंद।५२। याको रूप जगत्र में
घटि घटि रह्यो समाय। जाकुं उपम कोन की। कहा कवि
देत बताय।५३। पुत्र न नइया बेधु इक। कुटंब सनेह
हो और। कहा सिरया पुंजी रहें। सो राषें मेरी गेर।
५४। मनसा वाचा क्रमणा। यामें नहा विवेक। जाकें

कुलमें कोई नहीं। सुत्र जमाई एक।५५। राजपा
ट तेरो सबें एदोउ कन्या दास मोकूं अब आगया
होई करूंथी गो कुलवास।५६। मधुवा इका।।
इहतो कुल इह द्वारिका इहतुं मारो राज। हम
कुं आरी सुष विलसें। आवरन इजैका ज।५७
हम नो गी रस अवरहें कछु कहा तुं आगे महादे
व धंधी रच्यो जब तें डरयो आनंग।५८। एक देह कें
तीन तन आधें को मधुसार आधें तन की ड्यत्रि
या जेत मालती नार।५९। वेहपा उलवें सें वेतरी
इह फुनि नवर विसेष जीत परषण अब तरें
तीन जात तन एक।६०। सलिल त्रिवेणी जोय
कल त्रिवली त्रिघट निवास जेतमाल मधुमाल
ती. जीव त्रिण एक घट वास।६१। राजा वाक्यं:

जनमालमधुमालती एकठौरनलनतीन मैनाकैंजो
नीचावे कोइनअंतरजीन।६२॥ तेंबलकीमत्यन
ही कऊंकहातुमल जारंउअवरमिलोलकर फ
६६ निकेहरीमिमूल।६३॥ गिरजोगारखोनीकोहे आ
लअसलपुकार मोकुंचेतनयोनही पाइसजीस
कार।६४॥ अबअपराधषमाकरो इहमेरीमनुहा
र राजपाटसुषभोगवो केउभकेंकिरतार।६५॥
राजपाटकीकितकऊं अवरकेहेरहेमोन लर
कोहेसोइहसहेजोमे केहेंनसुननकोकोन।६६॥
ऊंमज्ञोबोधरजोगवो हमसेवाकेंकाम पावेंहो
इंजोईसहा सोहीकरोहेराम।६७॥ मधुवाक्यं॥
जादिनतेंपरोबीरची जोबजेंतजुगतोम तुव
नमध्यदीपकमनुं ज्युंघटभितरकाम।६८॥ देह

मेंजागृतसंघो जुगकोजेतपतितोम। जोबोजेंतोपा
ईये। ज्ञानसमाइककोम।६९॥ राजावाक्यं॥ जोएक
हमनमथकरो। न्यारेंकोईइकठोर। स्याणेहोयेंसो
मऊीयो। मुढकेंहेकुछओर।७०॥ मधुवाक्यं॥ गोर
समेंमांषणवसें। ज्युंकाष्टमेंआगदेहमथनतेंपा
इइ। ध्यानकोमहकेजाग।७१॥ गोरसकुंसबयुग
मथे। काष्टमथनकुनिहोय। देहमांषनजबही
करें। सोनरगुरुमुषहोय।७२॥ जोगोसंरषोजत
मए। गुरुमुषतएजुओर। मनसावाचाकमणा
तिनकुंरहोनगोर।७३॥ एकदासीनिगुरुकरें
दिनबसकरेंजुजोग। कुनिआजीतजीतेंनही। क
रेंजोगकेंजोग।७४॥ कोकपंडतीकेंकरें। जोसा

धे दिनमा ना घडी अेस चकेनल। सो लहें कोमकंथा
ना।७५।। चौपई।। झूले सर दिषकें मन नायो। इन्ते
नर सबें सु निपायो। जो निसरूप सबे निहू करायें
लिषें नखपेन न्यारो रहायें।७६।। जो लंनल नका उदर
में। कोई संसगनिको इफरसे। एह सम झायक लो
मो हि ल्मा गो। तो मो मनकी संसया जागे।७७।। मधुवा दू
का।। ग्राहि उयो तसारा हा जो लो। ईल जल ऊं नसहे
सकलों लों। सबहा में प्रति बिंब प्रकासें। सुं वहें यो
ति पिंड में सासें।७८।। उनदिवा ई तो का ला हें दंदा। इ
न देखा ईं तो सहसक चंदा। लिपें लिपें न सघुले व्या
पें। व्यलष निरंजन सघलें न्यापें।।७९।। हम हें काम
के यासवतारा। रूक रुकोंहें नसु नकों न्यारो। सम
जु लियसो सम ऊं जां लों। ग्रन सम कें मधु मा कथ

कहां लों।८०।। कवी।। साचा।। दोहरो।। रूपनो गावें मधुमा
लती। जे तमाल ता संग। मधुमालता विलासको। फूर न
नयो प्रसंग।८१।। कायथ निगम जऊ लइहें। नाथा सु
तन लई प्यारो। तानें चतुर सुजदा मकें। [illegible]
म।८२।। चौन्य नु धनमों कें दई कोम प्रबंध प्रकास। कवि य
ण सुंकर जो रके। कहे चतुरसु जनमदास।।८३।। वनस्प
तो में सब फल रस में उतपति संत। कथ्या मध्य मधु
मालती। ज्युं षटऋतु महिं बसंत।८४।। लता मध्य पन्नग
लता। सुधे मेघन सार। कथा मध्य मधु मालती। ज्युं श्र
न्ययण में हार।।८५।। चौपई।। रा जनी तका शा महों सा
षी। पंचाष्यान बुधइजा पी। चाण दूके चारुरी बताई
चोरी चोर सिंघ रामाई।८६।। पुन्य बसंत मजस गावें
जामें रूपरकामस ऊं वें तानां इह लीला विसतारी

रसिकनरश्रवणेंसुषकारी॥८७॥ रसिकहोईकोईनर
वाहे। अध्यातमज्ञातमअवगाहे। चातुरपुरुसहो
येदृहकोई। रहेंरससकलसमुझियहोई॥८८॥ किस
नदेवकोपुत्रकहावें। पुत्रकलत्रसबेंसुषपावें। उपदा
रिदनोनहीआवें। तासहोवेंबकुनवनिधपावें॥८९॥
श्लोक॥ कामयेलिप्यतेकामं। निर्धनोधनकाम्यते। अ
पुत्रोलप्यतेपुत्रं। व्याधिनस्यंनपोस्यते॥९०॥ दूहा॥ राजा
पढेंतोफिराजगति। मंत्रीपढेताहिसुद्ध। कामीकोंम
विलासरस। ग्यानीग्यानसुसिद्ध॥९१॥ संपूरणमधुमा
लती। कलसजयोसंपूरण। श्रोतावक्तासबेनकें। सुष
दायकदुषदूर॥९२॥ इतिश्रीमधुमालतीरी चोपई दूहा
श्लोककथा वंधसंपूर्णं॥ ग्रंथाग्र २००१ संवत १८६० वर्षे
[illegible] लि। मुक्तिविजयगणीपं। उतममसक
साजी श्रीहाराचंदजी। तसपुत्रः गुलाबचंदपठनार्थं। कान्हो [illegible]
[illegible]

३१

वरंभा चित्रं

३९

वरकंषा।

३९

वरुंखा। चित्र...